राधास्वामी दयाल की दया राधास

शब्द आरती मुकामात

प्रं० बा० ३ नं० श० २ (शब्द १) सं

भक्ति कर लीजिये । जग जीवन थोड़ा ॥ टेक

चार दिनों का खेल यह । देह तजना ज़रूरी

सतगुरु का सतसंग कर । तज मान ग़रूरी ।

हिये में आज बसाय ले । तू चरन हज़ूरी ।

अन्तर दृष्टि खुलाय कर। लखना सत नूरी।
सतगुरु संग तू बांध ले। प्यारी अब के जोड़ा ॥१॥
बन्द छुड़ावन आइया। सतगुरु संसारा।
आज्ञा उन की मानिये। हिये धर कर प्यारा।
शब्द की जुगत कमाय कर। कीजे निरवारा।
नाम बिना सब जीव। बहे चौरासी धार।
भाग जगा मोहि मिल गये। गुरु बन्दी छोड़ा ॥२॥

दयाकरी गुरु प्रीतमा । मोहिं संग लगाई ।
घर का भेद सुनाय कर । सुत अधर चढ़ाई ।
घंटा शंख सुनाय कर । फिर जोत लखाई ।
वहां से गगन चढ़ाय कर । धुन गरज सुनाई ।
चन्द्र रूप लख काल से । अब नाता तोड़ा ॥३॥
भंवरगुफ़ा में जाय कर । सुनी मुरली प्यारी ।
सतलोक में पुरुष का । जाय रूप निहारी ।

अलख अगम का रूप लख । स्रुत चढ़ गई पारी ।
मेहर दया गुरु पाय कर । हुई सब से न्यारी ।
राधास्वामी दरशन पाय कर । स्रुत होगई पोढ़ा। ॥४॥

प्रे० बा० ३ नं० श० २९ (शब्द २) सफ़ा ४८९

होली खेलत सुरत रंगीली । गुरू संग प्रीत बढ़ाई । टेक
सुरत अधीर मलत चरनन पर । प्रेम रंग बरसाई ।
गुनन गुलाल उड़ावत चहुं दिश । शब्द सुनत हरखाई ।

गगन पर करत चढ़ाई ॥ १ ॥
बिरह उमगाय चढ़त ऊंचेको । गुरु पद सुरत लगाई ।
धुन धधकार सुनत मन सरसा । हिये नया प्रेम जगाई ।
काल दल रहा मुरझाई ॥ २ ॥
गुरु मूरत निरखत मगनानी । लाल रूप सुत पाई
सुन्न शिखर जाय फाग रचाया । अमृत धार बहाई ।
भींज रहे गूरु बहिन और गूरु भाई ॥ ३ ॥

महासुख होय चढ़त गुफ़ा पर । सोहंग मुरली बजाई ।
सतपुर जाय मिली सतगुरु से । मधुर बीन धुन आई
चरन में राधास्वामी जाय समाई ॥ ४ ॥

प्रे० बा० ४ नं० श० ७ (शब्द ३)

आज गरज २ घन गरजै । मेरा जियरा सुन २ लरजै । टेक
श्याम घटा रही छाई । अमी धार की बरखा लाई ।
दामिन की दमक सुहाई । मेरा पिया बिन मनुआं तरसे ॥ १

सतगुर पिया भेद बतावें । गैल चलन की जुगत लखावें [illegible]
उन से नित प्रीत बढ़ावें । तब पिया प्यारे का पद [illegible]
मैं पिया की पीर दिवानी । मारग की पाय निशा[illegible]
तन मन धन कर क़ुरबानी । गुर चरन गगन जाय परसे ॥३
वहां से भी चली अगाड़ी । सतपुर सत रूप निहारी ।
गई अलख अगम के पारी । राधास्वामी दरस पाय हरखे ॥४

प्रे० बा० ४ (शब्द ४) नं० श ११८

तुम जीते सुरत चढ़ावो। मुये पर क्या करिहौ ॥ १ ॥
सुन २ शब्द चढ़ो घट अंतर। गुनना छोड़ रहो ॥ २ ॥
चढ़ २ जाओ त्रिकुटी पारा। सतपुर जाय बसो ॥ ३ ॥
राधास्वामी का दर्शन पाकर। चरनन लिपट रहो ॥ ४ ॥

प्रे० बा० ४ (शब्द ५) नं० श० १२२

आओरी सखी चलो गुरु सतसंग में। जीव का काज बना॥ टेक
गिरहि पंडित शेख और भेखा। सब मुये धर २ पिछली टेका

पूजें देवी देव अनेका । जनम २ भरमाई ॥ १ ॥
राधास्वामी चरनन धर परतीती। सतगुर से कर गहरी प्रीती
या विधि मन माया को जीती । काल को मार गिर
सतसंग कर ले गुरु उपदेशा। सुर्त शब्द में करो परवेशा ।
जनम मरन का मिटे अंदेशा । घटमें करो चढ़ाई ॥ ३ ॥
गुरु सरूप का कर दीदारा । सुन में सुनो शब्द झनकारा ।
मुरली बीन बजे जहां सारा । सतगुर दर्शन पाई ॥ ४॥

वहां से भी फिर अधर चढ़ावत। अलख अगम का दर्शन पावत
राधास्वामी चरन निहारत। निज घर जाय बसाई॥ ५॥

प्रे० बा० ४ (शब्द ६) नं० श० ४४

गुरु चरनन लौलीन। सुरत जग किरत हटाई।
मन इंद्रियन संग प्यार। और व्यौहार घटाई।
सतसंग प्यारा लागता। और सुरत शब्द अभ्यास।
सतगुरु सेवा धार कर। हिये होवत नित्त हुलास।

रीत गुरु भक्ती लगी प्यारी ॥ १ ॥
गुरु आरत विध धार । लिया सब साज बनाई ।
गुरु शोभा अद्‌भुत बनी । कुछ कहा न जाई ।
प्रेम मगन सब हो रहे । और चहुं दिस आनंद छाय ।
गुर प्यारे का दरस कर । सब लीना भाग जगाय ।
गाऊं कस महिमा गुरु भारी । २
सतसंग में गुरु बैठ के । निज बचन सुनाये ।

सुन २ बाढ़ा प्रेम । सुरत मन अति सरसाये ।
घट में झांक मगन होय । सुन अनहद् झनकार ।
दूत सकल निरबल हुए । गुरु कीनी मेहर अपार ।
भोग सब लागे अब खारे । ३
गुरु की सरन सम्हार । बिरह हिये नई उमगाई ।
काल करम बल तोड़ । सुरत को अधर चढ़ाई ।
गगन पार सुन में गई । और देखा हंस बिलास ।

भंवरगुफ़ा सुन बांसुरी । किया सतगुर चरन निवास ।
सुरत हुई राधास्वामी की प्यारी । ४

प्रे० बा० १ नं० श० ५ (शब्द ७) सफ़ा १०

सखीरी क्यों देर लगाई । चटक चढ़ो नभ द्वार । १
इस नगरी में तिमर समाना । भूल भरम हरबार । २
खोज करो अंतर उजियार । छोड़ चलो नौ द्वार । ३
सहस कंवल चढ़ त्रिकुटी धावो । भंवरगुफ़ा सतलोक निहार

अलख अगम के पार सिधारो। राधास्वामी चरन सम्हार ॥

प्रे० बा० १ नं० श० २७ (शब्द ८) सफा २९१

भक्ती थाल सजाय कर। प्रेम की बाती लाय ॥
सुरत निरत दोउ जोड़ कर। शब्द की जोत जगाय ॥
आरती राधास्वामी गाऊंगी ॥ १ ॥
अद्भुत रूप लखूं गुरु अंतर। प्रीत सहित धारूं गुरु मंतर ॥
नाम धुन विमल जगाऊंगी ॥ २ ॥

सुन्न में जाय त्रिवेनी न्हाऊं । हंसन संग मिलाप बढ़ाऊं ॥
शिखर चढ़ सारंग गाऊंगी ॥ ३ ॥
दया ले गई महासुन पार । भंवर धुन मुरली लई सम्हार ॥
अलख लख गई अगम के पास ।
किया जाय राधास्वामी चरनन बास ॥
नित्त मैं राधास्वामी ध्याऊंगी ॥५॥

प्रे० बा० २ नं० श १६ (शब्द ९) सफ़ा २०५

सुरतिया लाल हुई चढ़ गगन निरख गुरु रूप ॥ १ ॥
घंटा संख गरज धुन सुनकर। छोड़ दिया भौ कूप ॥ २ ॥
आसा तृश्ना मनसा जग की। फटक दई ले गुरु का सूप॥४॥
सुन्न और महा सुन्न के पारा। निरखा सूरज सेत सरूप ॥ ४ ॥
सत्तपुरुष का दरशन करके।
पहुंची राधास्वामी धाम अनूप ॥ ५ ॥

प्रे० वा० २ नं० श० ५३ (शब्द १०) सफ़ा २७५

सुरतिया चाख रही। घट शब्द अमीं रस सार ॥ १ ॥
सतगुरु दया निरख रही मन में। झिल मिल जोत उजार
देख गगन में सूर प्रकाशा। चन्द्र चांदनी दसवें द्वार ॥ ३ ॥
भंवरगुफ़ा सोहंग धुन पाई। पहुंची सत्तपुरुष दरबार ॥ ४ ॥
राधास्वामी धाम अनूपा। निरखा अचरज रूप अपार ॥ ५ ॥

प्रे० बा० २ नं० श० ५९ (शब्द ११) सफ़ा २७६

सुरतिया सज धज से आई। चलन को सतगुर देस ॥ १ ॥

विरह भाव वैराग सम्हारत। तज दिया माया देस ॥ २॥
सुरत शब्द गहि चढ़ती सुनमें। धारा हंसा भेस ॥ ३ ॥
सत्तलोक सतपुरुष रूप लख। जहां न काल कलेश ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन जाय कर परसे। पाया पूरन देश ॥ ५ ॥

प्रे० बा० २ नं० श० ६३ (शब्द १२) सफ़ा २८०

सुरतिया दमक रही। चढ़ घट में नभ के द्वार ॥ १ ॥
जोत उजार छिटक रहा सुनमें। घंटा शंख धूम अति डार ॥२॥

सूरज चांद अनेकन देखे। फूल रहीं अद्भुत फुलवार ॥ ३ ॥
आगे चढ़ पहुंची गगनापुर। उठत नान जहां बानी सार ॥ ४
सतगुर रूप लखा सतपुर में। राधास्वामी कीनी मेहर अपार

प्रे० बा० २ नं० श० ६३ (शब्द १३) सफ़ः ५०२

आज आई सुरत हिये भाव धार। ॥ टेक ॥
सत संगियन से हेल मेल कर। सतसंग करती चित्त सम्हार
गुरु चरनन में प्रीत बढ़ावत। गुरु सरूप का ध्यान सम्हार

शब्द सुनत घट मे नभ द्वारे । मगन होय चढ़ गगन मंझार
ताल मृदंग वजे सारंगी । मुरली बीन सुनी झनकार ॥ ४ ॥
राधास्वामी सतगुरु दीन दयाला । मेहर करी पद दीना सार

प्रे० वा० २ नं० श० २६ (शब्द १४) सफ़ा ५१.०

छोड़ चल सजनी माया धाम । ॥ टेक ॥
निज घर तेरा संत के देशा । भाग चलो तज क्रोध और काम
संत चरन में धार पिरीती । भेद लेघ उन से निज नाम ॥ २ ॥

सुरत सम्हार सुनो धुन घट में । पिओ अमीरस जाम

गुरु की दया ले अधर चढ़ावो । पहुंचो त्रिकुटी धाम ॥ ४ ॥

राधास्वामी मेहर से पार उतारें । निज घर में देवें विश्राम ॥५

प्रे० वा० २ नं० श० ३८ (शब्द १५) सफ़ा ६०२

खिला मेरे घट में आज बसंत । टेक

भाग मेरा अचरज जाग रहा । हुए अब परसन सतगुरु संत

सुरत मन घट में दीन चढ़ाय । कंवल जहां खिल रहे आज अगित

शब्द का निरखा घट परकाश । मधुर २ धुन बजत अनंत ॥३॥

खेल रही हंसन संग कर प्रीत ।

सुरत हुई सुन में अभय आचिंत ॥ ४ ॥

सत्त अलख और अगम के पारा ।

राधास्वामी चरनन जाय मिलंत ॥ ५ ॥

प्रे० बा० २ नं० श ४२ (शब्द १६) सफ़ा ६०६

शब्द संग सुरत अधर चढ़ाय ॥ टेक

गुरु की दया संग ले अपने । निज घर ओर चलो तुम धाय
नभ में जाय सुनो धुन घंटा । जोत रूप लख गगन समाय
गुर मूरत का दरशन करके । सुन में अक्षर रूप लखाय ॥ ३
मुरली सुन धुन वीन सम्हारो । सत्तपुरुष का दरशन पाय ॥४
राधास्वामी चरन निहारो । धाम अनामी जाय समाय ॥ ५ ॥

प्रे० वा० २ नं० श० ५५ (शब्द १७) सफ़ा ६१९

सुरत हुई मगन दरश गुरु पाय । टेक

वचन सुन सीतल हुई मन में । भेद पाय सुर्त शब्द लगाय १
प्रीत बढ़ी सुन २ धुन घट में । हिये में दृढ़ परतीत बसाय ॥२॥
दया मेहर गुरु परखत छिन २ । उमंग २ सेवा को धाय ॥ ३ ॥
हरख २ सुर्त चढ़त अधर में । घंटा शंख और गरज सुनाय ४
सारंग मुरली बीन बजावत । राधास्वामी सन्मुख आरत गाय

प्रे० बा० ३ नं० श० ५ (शब्द १८) सफ़ा ७

कामना जग की तज मन यार । टेक

जगत गुनावन विष जानो । तामें बहत सुरत की धार ॥ १ ॥
ज़हर हलाहल नितही खावत । अमृत रस नाहिं चाखत सार २
गुरु सतसंग कर शब्द भेद ले । सुरत चढ़ाओ धुन की लार
गगन जाय गुरु रूप निहारे । सुन में निरखो निमल बहार ॥४॥
राधास्वामी चरन बसाय हिये में । पहुंचो सत्तपुर दरबार ५॥

प्रे० बा० ३ नं० श० ९ (शब्द १९) सफ़ा २५

गुरु प्यारे चरन पकड़ मज़बूत ॥ टेक

चरनन में नित प्रीत बढ़ाती । छोड़ दई जग की करतूत ॥ १ ॥
शब्द जुगत ले जूझूं घट में । सहज करूं बस मन का भूत ॥२॥
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाऊं । धुन से लागे मेरा सूत ॥ ३ ॥
नभ को फोड़ गगन में धाऊं । सैर करूं आलम लाहूत ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से आगे चाली ।
सतगुरु दरस मिला जाय हूत ॥ ५ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० १ (शब्द २०)सफ़ा १०६

गुरु का रूप लखा त्रिकुटी में । सत्तपुरुष का धारा ध्यान । सत्त लोक ठिकान ॥ ४ ॥

आगे चल पहुंची धुर धामा । राधास्वामी अचरज दरस दिखान मैं रही हैरान ॥ ५ ॥

प्रे० वा० ३ नं० श० २ (शब्द २१) सफ़ा १५२

सतगुरु प्यारे ने सुनाई । घट झनकारी हो । टेक

दीन अधीन पड़ी गुरु चरना । हुए प्रसन्न दई निज सरना

करी कृपा भारी हो ॥ १ ॥
भेद सुनाय दिया शब्द उपदेशा । निज घर का दिया [illegible] सँदेसा
अगम अपारी हो ॥ २ ॥
मगन होय करती घट करनी । सुरत निरत होइ धुन में धरनी
अधर सिधारी हो ॥ ३ ॥
धंधा संग और गरज छुड़ाई । सारंग रागी और मुरली बजाई
हुई दीन अधारी हो ॥ ४ ॥

राधास्वामी चरन सुरत हुई लीनी । प्रेम रंग की वरषा कीनी
भींज रही सारी हो ॥ ५ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० ४ (शब्द २२) सफ़ा १५५

सतगुरु प्यारे ने लखाया । पिया देस नियारा हो ॥ टेक ॥
देस पिया का ऊंच से ऊंचा । संत बिना कोई वहां न पहुंचा
माया ब्रह्म के पारा हो ॥ १ ॥
जगत जीव करमन में अटके । बाहर मुख पूजा में भटके

मिला राधास्वामी चरन अधारा हो ॥ ५ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० ५ (शब्द २३) सफ़ा १५६

सतगुरु प्यारे ने मिलाया । प्रीतम प्यारा हो ॥ टेक

बहु दिन जग में खोजत बीते । पंडित भेष लखे मैं रीते ॥
कोइ जाने न वह घर न्यारा हो ॥ १ ॥

मेहर हुई धुरकी गुरु मिलिया ।
उन संग मन और सुरत सम्हलिया ।

भेद मिला धुन सारा हो ॥ २॥
उमंग सहित घट करी कमाई । धुन संग मन और सुरत लगाई
लखा अचरज उजियारा हो ॥ ३ ॥
चढ़ २ सुरत गई दस द्वारे । सतपुर सतगुरु दरस निहारे ॥
गई अगम के पारा हो ॥ ४ ॥

मेहर हुई पहुंची धुर धामा। राधास्वामी चरन मिला विसरामा
संत का निज दरबारा हो ॥ ५ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० २६ (शब्द २३) सफ़ा १९२

सतगुर प्यारे ने खिलाई घट फुलवारी हो ॥ टेक

शब्द भेद ले लगी सुत घट में । धुन के फूल खिले तिल पटमें

झांकी कंवल कियारी हो ॥ १ ॥

धुन घंटा और संख सुनाई । सूरज चांद अनेक दिखाई ॥

चढ़ गई गगन अटारी हो ॥ २ ॥

सुन्न मंडल का ताला खोला । शब्द सेत धुन सारंग बोला ।
जहां अमीसरोवर भारी हो ॥ ३ ॥
आगे चल गई भंवर अस्थाना । सेत सूर जहां नूर दिखाना ॥
मुरली संग लगी तारी हो ॥ ४ ॥
आगे लखा अचरज उजियारा ।
सत्त अलख और अगम निहारा ॥

राधास्वामी चरन बलिहारी हो ॥ ५ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० २८ (शब्द २४) सफ़ा १९५

सतगुर प्यारे ने सुधारा । मनुआं अनाड़ी हो ॥ टेक

दया करी सतसंग में खींचा ।

वचन सुनाय अधिक मन भींचा ॥

भोग तरंग निकारी हो ॥ १ ॥

सेवा करत बढ़ा अनुरागा । सोता मन सुन सुन धुन जागा ॥

लखी घट जोत उजारी हो ॥२॥
गुरु की दया ले गई सुत आगे । गगन और जहां ओ अगजागे
हुई गुरु शब्द अधारी हो ॥३॥
वहां से चल पहुंची सतपुर में । सतगुरु प्यारे मिले अधर में ।
गत मत अगम अपारी हो ॥४॥
गुरु प्यारे मोहि आप सुधारी । अलख अगम के पार कियारी
राधास्वामी चरन निहारी हो ॥५॥

प्रे० वा० ३ नं० श० ३१ (शब्द २५) सफ़ा १९९

सतगुरु प्यारे ने निभाई। खेप हमारी हो ॥ टेक

नइया मोर वहत मझ धारा। गुरु विन कौन लगावे पारा ॥
वही जीव हित कारी हो ॥ १ ॥

सतगुरु दीन दयाल हमारे। मेहर करी मोहि लीन सम्हारे ॥
भौसागर पार उतारी हो॥ २ ॥

वचन सुना दई अगम निशानी। सुरत शब्द मारग दरसानी।

सुत गगना ओर सिधारी हो ॥ ३ ॥
लख २ जोत सूर और चंदा । तोड़ अंड फोड़ा ब्रह्मंडा ॥
भंवरगुफ़ा धुन धारी हो ॥ ४ ॥
मेहर हुई लखिया सत नूरा । अलख अगम की होगई धूरा ।
राधास्वामी काज संवारी हो ॥ ५ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० ३३ (शब्द २६) सफ़ा २०३

सतगुरु प्यारे ने घसाई हिये भक्ति करारी हो ॥ टेक ॥

सुन २ बचन नसे सब भरमा । दूरि हुए सब कंटक कर्मा ।
शब्द संग लगी ताड़ी हो ॥ १ ॥
अभ्यास करत हिये बढ़त अनंदा॥ द्रोह मोह का काटा फंदा ।
धूम चली दस द्वारी हो ॥ २ ॥
नभ में निरखा जोत सरूपा । त्रिकुटी जाय लखा गुरु रूपा ॥
सुन में चंद्र उजारी हो ॥ ३ ॥
भंवरगुफ़ा सोहंग धुन पाई । मधुर बांसुरी बजे सुहाई ॥

सुनी वीना झनकारी हो॥ ४॥
अलख अगम करी मेहर नियारी।
राधास्वामी चरन प्रीत वढ़ी भारी॥
अचरज दरस निहारी हो॥ ५॥

प्रे० वा० ३ नं० श० ३४ (शब्द २७) सफ़ा २०४

सतगुरु प्यारे ने निकारे मन के विकारा हो ।टेक॥
सतसंग में गुरु लीन लगाई।वचन सुना मेरी समझ वढ़ाई॥

मेहर से दीन सहारा हो ॥ १ ॥
अपने चरन की प्रीत बसाई । सुरत शब्द की राह बताई ॥
भेद दिया घट सारा हो ॥ २ ॥
कर अभ्यास मलिनता नाशी । घट में शब्द किया परकाशी ।
सुरत चढ़ी नौपारा हो ॥ ३ ॥
पांच रंग निरखे तत सारा । चमक बीजली चंद्र निहारा ॥
फोड़ा तिलका द्वारा हो ।४ ॥

गुरु पद लख निरखा सत सूरा । अलख अगम का पाया नूरा
राधास्वामी धाम निहारा हो ॥ ५ ॥

प्रे. बा. ३ नं. श, ३९ (शब्द २८) सफ़ा २१२

सतगुरु प्यारे ने छुड़ाया । जग ब्योहार असारा हो ॥ टेक
मेंहर दया गुरु कस कहूं गाई । सतसंग में मोहिं खैंच लगाई
भेद दिया घट सारा हो ॥ १ ॥
ध्यान धरत गुरु छवि दरसानी । शब्द सुनत मन हुआ अकामी ।

सुरत चली गुरु लारा हो ॥ २ ॥
जोत सरूप लखा नभ पुर में । गुरु दरसन पाया त्रिकुटी में ॥
भौ जल पार उतारा हो ॥ ३ ॥
सुन में जाय सरोवर न्हाई । हंसन संग मिलाप वढ़ाई ।
निरखा चन्द्र उजारा हो ॥ ४ ॥
मुरली बीन सुनी धुन दोई । अलख अगम पद परसे सोई ॥
राधास्वामी धाम निहारा हो ॥ ५ ॥

प्रे. बा. ३ नं. श. ५ (शब्द २९) सफ़ा २३४

अहो मेरे प्यारे सतगुरु अचरज
शब्द सुनादो धुन में स्रत अटके । टेक
काल करम मोहिं अति भरमाते ।
मन इन्द्री बहु विघन लगाते ।
भोगन में भटके ॥ १ ॥
दया करो मेरे सतगुरु प्यारे । मेहर से लो मोहिं आज सम्हारे
जगत भाव झटके ॥ २ ॥

दिन २ प्रीत बढ़े तुम चरनन । काट देव बंधन तन मन धन
सुरत अधर सटके ॥ ३ ॥

सुन २ धुन नभ ऊपर धावे । गगन जाय धुन गरज सुनावे ॥
सुन में जाय मटके ॥ ४ ॥

धुन मुरली और बीन बजावे । अलख अगम धुन अधिक सुहावे
रही राधास्वामी रटके ॥ ५ ॥

प्रे० बा ३ नं० श, १ (शब्द ३०) सफ़ा २९६

कैसे गाउं गुरु महिमां अति अगम अपार ॥ टेक ॥
गुरु प्यारे मेरे राधास्वामी दाता ।
उनके चरन पर जाऊं बलिहार ॥ १ ॥
राधास्वामी मेहर से अंग लगाया ।
काल जाल से लिया है निकार ॥ २ ॥
शब्द भेद दे सुरत चढ़ाई । घंटा संख सुनी धुन सार ॥ ३ ॥
लाल सूर लख चन्द्र निहारा ।

मुरली सुन धुन बीन सम्हार ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन परस मगनानी ।
पहुंच गई अब धुर दरबार ॥ ५ ॥

प्रे, बा. ३ नं. श. २ (शब्द ३१) सफ़ा २९७

कैसे मिलूंरी पिया से चढ़ गगन गली ॥ टेक ॥
रैन अंधेरी और बाट अनेड़ी ।
कोइ संग न साथी कहां जाऊंरी अली ॥ १ ॥

खोज करो गुरु दीन दयाला। जोगी ध्यानी रहे तली ॥ २ ॥
शब्द भेद ले सुरत चढ़ाओ। निरखो नभ चढ़ जोत बली ।३।
त्रिकुटी जाय सुनो अनहद धुन। सुन्न में हंसन संग रली ॥४
सतपुरुष का रूप निरख कर। राधास्वामी चरनन जाय मिली

प्रे० वा० ३ नं० १ (शब्द ३२) सफ़ा ३४५

ठुमक चढ़त सुरत सुन २ घट धुननियां ॥ ॥ टेक ॥
मन इंद्री सब उठे जाग। सतगुर के चरन लाग।

जगत भोग छोड़ राग। गगन ओर चलियां ॥ १ ॥
श्याम कंज द्वार तोड़। ऊपर को चली दौड़।
घंटा संख सुनत शोर। जोत रूप लखियां ॥ २ ॥

गगन गरज सुनत चली। ररंकार धुन संग मिली।
वेद कतेब सब रहे तली। काल करम दलियां ॥ ३ ॥
महासुन्न अंध घोर। मुरली धुन करत शोर।
बीन सुनी सतपुर की ओर। पुरुष गोद पलियां ॥ ३ ॥

वहां से भी गई पार । अलख अगम धुन सम्हार ।
राधास्वामी पद निहार । चरन सरन रलियां ॥ ५ ॥

प्रे. वा० ३ म. श० २ (शब्द ३३) सफ़ा ३४७

आज हुआ मन मगन मोर । सुन सुन गुरु बतियां ॥ ॥ टेक ॥
राधास्वामी महिमा अपार । सुरत शब्द जुगत सार ॥
करम धरम दिये निकार । गुरु चरनन रतियां ॥ १
गुरु स्वरूप लाय ध्यान । धुन में सुत धरी तान ।

मन के दिये तोड़ मान । काल जाल कटियां ॥ २ ॥
मन ओर सुरत अधर धाय । नभ द्वारा दिया तोड़ जाय ।
जोत रूप रहा जगमगाय । वंक नाल धसियां । ३ ।
त्रिकुटी मिरदंग वजाय । सारंग संग रही गाय ।
मुरली धुन गुफ़ा सुनाय । सत्तरूप लखियां । ४ ।
राधास्वामी सतगुरु दयाल । कीना मोहि अव निहाल ।
अलख अगम के पार चाल । चरन अंवु छकियां ॥ ५ ॥

प्रे० वा० ३ नं० श० ४ (शब्द ३४) सफ़ा ३५०

प्रेमी सुत उमंग २ गुरु सन्मुख आई। ॥ टेक ॥

भाव भक्ति हिये धार। करम धरम भरम टार ॥

भोग वासना तुरत जार। ले सतगुर सरनाई ॥ १ ॥

सतसंग में नित्त जाग। गुरु चरनन बढ़त लाग।

परमारथ का जगत भाग। गुरु की दया पाई ॥ २ ॥

शब्द जोग नित कमाय। मन और सुत अधर धाय।

घट में आनंद पाय। दिन २ मगनाई ॥ ३ ॥
तिल का लिया ताला तोड़। घट में अब मचा शोर।
काल करम का घटा ज़ोर। गुर पद परसाई ॥ ४ ॥
बेनी अश्नान कीन। मुरली धुन सुनी बीन।
राधास्वामी चरन हुई दीन। छिन २ बलजाई ॥ ५ ॥

प्रे० बा० ३ नं० ७ श० ९ (शब्द ३५) सफ़ा ३५९

मन इंद्री आज घट में रोक। गुरु मारग चलना। ॥ टेक

गुरु चरनन में लाय प्यार । राधास्वामी धाम की आस धार
काल करम के विघन टार । गुरु की गोद पलना ॥ १ ॥
सतसंग के वचन सार । चेत सुनो और हिये में धार ।
घट में चलो सतगुरु की लार । मन माया दलना ॥ २ ॥
जगत भाव और मोह त्याग । भोगन में तजो राग ।
संग सतगुरु तू खेल फाग । क्यों जग माहीं जलना ॥ ३ ॥
शब्द जुगत नित कमाय । गुरु सरूप ध्यान लाय ।

राधास्वामी चरन सरन ध्याय । गुरु चरनन रलना । ४ ।
श्याम सेत घाट पार । सेत सूर लख उजार ।
सत्त अलख अगम निहार । राधास्वामी से मिलना । ५ ।

प्रे० बा० ३ नं० श० १० (शब्द ३६) सफ़ा ३६१

मन इन्द्री को घट में घेर । गुरु जुगत कमावो । ॥ टेक ॥
तीसर तिल में दृष्टि जोड़ । मन की गुनावन देव छोड़ ।
घट में सुन शब्द शोर । मन सुरत लगावो ॥ १ ॥

गुरु सरूप अगुआ बनाय ।
सहसकंवलदल पहुंचो धाय ॥
धुन घंटा और संख गाय । गगन ओर धावो ॥ २ ॥
त्रिकुटी सुन गरज धुन । चन्द्र रूप लख जाय सुन ।
मुरली धुन पड़ी सरवन । सत पुरुष ध्यान लावो ॥ ३ ॥
राधास्वामी कीनी दया अपार ।
काल और महाकाल रहे हार ।

काट दिये सब करम झाड़ । हरदम उन गुन गावो ॥ ४ ॥
वहां से भी चली सुरत । अलख अगम जाय किया निरत ।
चरनन पर सीस धरत । राधास्वामी पद पावो ॥ ५ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० ११ (शब्द ३७) सफ़ा ३६३

मनुआं क्यों सोचे नाहिं । जग में दुख भारी ॥ टेक ॥
जल्दी से उठ चेत जाग । सतसंग में तू जाव भाग ।
सतगुरु के चरन लाग । तज करम धरम सारी ॥ १ ॥

जग में कोइ नाहिं मीत । सतसंग में धरो चीत ।
गुरु भक्ती की धार रीत । मत भरमे प्यारी ॥ २ ॥
सुरत सब्द उपदेश सार । गुरु से ले धर के प्यार ॥
गुरु सरूप ध्यान धार । निरखो घट उजियारी ॥ ३ ॥
पिरथम लख जोत सार । निरखो फिर सूरज उजार ॥
चन्द्ररूप सुन में निहार । धुन मुरली धारी ॥ ४ ॥
सत अलख अगम निहार । सूरत अब हुई सार ।

राधास्वामी पद निरखा अपार। चरनन बलिहारी ॥ ५ ॥

प्रे० बा० ३ न० श० १५ (शब्द ३८) सफ़ा ३७०

चल री सुत गुरु के देस। धर हिये अनुरागा ॥ टेक ॥

सतगुरु के जाव पास। देखो सतसंग बिलास।
छोड़ो अब जग की आस। चित धर वैरागा ॥ १ ॥

शब्द का ले उपदेश सार। घट में सुन धुन झनकार।
गुरु सरूप ध्यान धार। काम क्रोध त्यागा ॥ २ ॥

लख जग का व्योहार असार। स्वारथ के सब ही यार।
मन हुआ इन से बेज़ार। गगन ओर भागा ॥ ३ ॥
नभ में लख जोत अजूब। त्रिकुटी गुरु का सरूप।
सुन में खिला चंदा अनूप। सोहंग शब्द जागा ॥ ४॥
सतपुरुष का दरस पाय। अलख अगम को परसा जाय
राधास्वामी धाम की ओर धाय। चरन सरन लागा ॥ ५ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० २ (शब्द ३९) सफ़ा ३७५

चलो घट में दौरा करोरी सखी ।
जहां अनहद वाजे बाज रहे ॥ टेक ॥
नैनन में तुम जाय वसो । फिर पचरंगी फुलवार लखो ॥
तिल खिड़की को खोल धसो । जहां घंटा संख नित गाजरहे
जोत उजार लखत स्रुत चाली । वंक परे धुन गगन सम्हाली॥
गुरुसरूप लख हुई निहाली । जहां सूर चंद बहु लाज रहे
सुन धुन में अब सुरत धरो । जहां त्रिवेनी अश्नान करो॥

हंसन से चित हरख मिलो । जहां अनेक अखाड़े साज रहे
भंवरगुफ़ा मुरली धुन गावो । सुन २ बीन सतपुर धावो ॥
हंसन संग आरती लावो । जहां सतगुर संत विराज रहे ॥
राधास्वामी दया बना सब काजा ।
पूरन भक्ति मिला अब साजा ॥
काल और महाकाल रहे लाजा । करम धरम सब दाज रहे ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० १ (शब्द ४०) सफ़ा ३७९

चल देखिये सत संग में । जहां निरमल फाग रचोरी ॥ टेक॥

सतगुर जहां वचन सुनावें । प्रेमी जन सुन हरखावें ॥

दरशन की शोभा निरखत । मन में गुरु भाव बढ़ोरी ॥ १ ॥

भक्ती रंग बरसत छिन छिन । हिये प्रेम बढ़त अब दिन दिन

गुरु पै सब वारत तन मन । धन धन गुरु शोर मचोरी ॥२

काल अपने खेल खिलावे । जीवन को सद भरमावे ॥

गुरु निकट न आने पावे । घर इसका आज तजोरी ॥ ३ ॥

ले सुरत शब्द उपदेशा । घट धुन में करो प्रवेशा ॥
अस छूटे काल कलेशा । गुरु पद जाय दरस्त तकोरी ॥ ४ ॥
सुन और महासुन पारा । चढ़ी सुरत पकड़ धुन धारा ॥
राधास्वामी धाम निहारा । जहां अचरज खेल खिलोरी ॥ ५ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० ४ (शब्द ४१) सफ़ा ५०५

बिन सतगुरु की भक्ति । जन्म बिरथा नर नारी ।
गुरु ज्ञान बिना संसार । अंधेरा भारी ॥ टेक ॥

क्या जन्मे जग में आय। शब्द का खोज न कीन्हा ॥
अटके देवी देव। संत का मरम न चीन्हा ॥
दुख सुख भोगें सदा। करम का यह फल लीन्हा ॥
भोगन में रहे लिपटाय। विषय रस नितही पीना ॥
जन्म मरन नाहिं छुटे। करम का चक्कर भारी ॥
बिन सतगुर की भक्ति। जन्म विरथा नर नारी ॥ १ ॥
वे बड़ भागी जीव मिले। जिन सतगुर प्यारे ॥

कर उनका सतसंग । चरन उन सिर पर धारे ॥
सार वचन उरधार । हुए करमन से न्यारे ॥
सो मत लीन्हा चीन्ह । भरम तज दीने सारे ॥
विन गुरु कौन सुनाय । जुगत यह सब से न्यारी ॥
विन सतगुरु की भक्ति । जन्म विरथा नर नारी ॥ २ ॥
प्रीत वढ़त गुरु चरन । दिनो दिन आनंद भारा ॥
मेहर से दिया गुरु भेद । शब्द का अगम अपारा ॥

ध्यान धरत गुरु रूप। हुआ घट में उजियारा ॥
निस दिन सुरत लगाय। सुनत अनहद झनकारा ॥
विन गुरु कैसे लगै। सुरत की घट में तारी ॥
विन सतगुरु की भक्ति। जन्म बिरथा नर नारी ॥ ३ ॥
तिल का द्वारा फोड़। लखा घट जोत उजारा ॥
सुन धुन घंटा संख। गगन में वजा नगारा ॥
गुरु का दरशन पाय। हुआ तन मन से न्यारा ॥

करम जाल कट गया। जूझ कर काल भी हारा ॥
बिन सतगुरु की सरन। नहीं अस होय उबारी ॥
बिन सतगुरु की भक्ति। जन्म बिरथा नर नारी ॥ ४ ॥
सुन धुन ऊपर चढ़ी। करी हंसन संग यारी ॥
महासुन्न के पार। सुनी मुरली धुन न्यारी ॥
सतपुर पहुंची धाय। लगी बीना धुन प्यारी।
लख अलख अगम का रूप। हुई सूरत सुखियारी ॥

राधास्वामी चरनन मिली । हुआ आनन्द अति भारी ।
बिन सतगुर की भक्ति । जन्म बिरथा नरनारी ॥ ५ ॥

प्रे० बा० ४ नं० श० १ (शब्द ४२)

क्यों सोच करै मन मूरख । प्यारे राधास्वामी हैं रखवारे ॥टेक
जब जन्मा तब दूध दियो तोहि । माता गोद पलाया ।
सर्व भांति तेरी रक्षा कीनी । चर्नन मेल मिलाया ॥
रहा था फंस नौ द्वारे ॥ १ ॥

सर्व भोग इन्द्रियनके दीने । जगत तमाशा दिखाया ॥
खैंच लिया सत संगमें फिर तोहि । निजघर भेद सुनाया ॥
मेहर से खोल चलो दसद्वारे ॥ २ ॥
बचन सुना तेरी समझ बढ़ावें । मनकी निरख करावें ॥
करम भरम और टेक छुड़ाकर । शब्द में सुरत लगावें ॥
अधर चढ़ देख वहारे ॥ ३ ॥
घंटा संख सुनावें नभपुर । त्रिकुटी लख गुरुनूरा ॥

चन्द्र चांदनी चौक निहारो । गुफ़ा परे पदपूरा ॥
आरती सतगुरु धारे ॥
ले दुरबीन पुरुषसे प्यारी । अलख अगमको चाली ॥
तिस पर राधास्वामी धामअपारा । लख २ हुई निहाली ॥
सीस उन चरनन डारे ॥ ५ ॥

प्रे० बा० ४ नं० श० २ (शब्द ४३)

क्यों अटक रही जगप्यारी । यामें दुख भोगे भारी ॥

कोई यहां तेरा संग न साथी। स्वारथ संग सब मिलरहते ॥
क्यों धोखा खावो इनमें। क्यों भोगन संग नित वहते ॥
जमडंड सहो सरकारी ॥ १ ॥
सतसंग में मेल मिलाना। गुरु चरनन भाव चढ़ाना ॥
सुन २ निज वचन कमाना। घटमें गुरु रूप धियाना ॥
गुरुभक्ती रीत सम्हारी ॥ २ ॥
सुत शब्द जुगत ले गुरुसे। नितनेम से कर अभ्यासा ॥

मन इन्द्री सुरत समेटो । फिर घटमें देख विलासा ॥
ले गुरु की मेहर करारी ॥ ३ ॥
गुरु करम भरम सब टारें । मनके करें दूर विकारा ।
सब पिछली टेक निकारें । दरसावें फिर घर न्यारा ॥
लख उनकी गतमत न्यारी ॥ ४ ॥
राधास्वामी सरन सम्हारो । गुरु के संग अधर सिधारो ॥
लख जोत सूर और चन्दा । सत अलख अगम को धारो ॥

हुई राधास्वामी चरनदुलारी ॥ ५ ॥

प्रे० वा० ४ नं० श० ३ (शब्द ४८)

क्यों जगमें रहे भरमानी । मिल गुरु से घर को चलना ॥
यह देश बिगाना भाई । नित तिमर रहे यहां छाई ॥
और काल करम भरमाई । भोगन संग छिन २ गलना ॥ १ ॥
सतसंग का देख बिलासा । गुरु चरनन धर बिस्वासा ॥
निज घर की धारो आसा । जग भाटी में नहीं जलना ॥ २ ॥

गुरु प्रेम हिये में धारो । जग आसा दूर निकारो ॥
दूतन को मार पछाड़ो । मन माया छिन २ दलना ॥
सुत शब्द जुगत ले सारा । गुरु नाम करो आधारा ।
करमों का काटो जारा । धुन सुन २ घटमें चढ़ना ॥ ४ ॥
त्रिकुटी का देख उजेरा । सतपुर जाय कीना फेरा ॥
कर अलख अगमसे नेहरा । फिर राधास्वामीसे जाय मिलना

प्रे० बा० ४ नं० श० १९ (शब्द ४५)

सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी ।
आज नई धुन घटमें सुनाय रहेरी ॥ टेक ॥
सुन २ धुन सुत हुई मतवाली । काल करम मुरझाय रहेरी १॥
मन और सुरत दोऊ रस पावत । गगन ओर अब धाय रहेरी
हंसन संग करत नित केला । मानसरोवर न्हाय रहेरी ॥ २ ॥
अधर जाय सुरत मिली भक्तनसे । भंवरगुफा ढिग छायरहेरी ४
धुन सुन गई जहां राधास्वामीप्यारे । अचरज दरस दिखाय रहेरी

प्रे ० बा० ४ नं० श० २१ (शब्द ४६)

सुनरी सखी मेरं प्यारे राधास्वामी ॥
मोहि मेहर से अंगवा लगाय रहेरी ॥ टेक ॥
सतसंग कर बाढ़ा बिस्वासा । गहिरी प्रीत जगाय रहेरी १
स्वामी चरनन पर जाऊं बलिहारी । मेहरकासबगुनगायरहेरी
शब्द अभ्यास करत मन सूरत । गगनओर नितधाय रहेरी ३॥
दया हुई सुत सतपुर आई । अलख अगम दरसाय रहेरी॥ ४॥
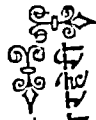
राधास्वामी धाम गई सुत सजके। निज महलमें संगखिलाय रहेरी

प्रे० बा० ४ नं० श० ४५ (शब्द ४७) सफ़ा

आज धुन अनहद बाजरहीहै। अधर चढ़ सूरत गाज रहीहै ॥१
देख घट जगमग जोत उजार। मगन होय भाग सराह रहीहै २
सुनत धुन गगना ओअंकार। रूप गुरु अद्भुत निरख रहीहै ३
सुन्न में खिली चांदनी सार। ररंगधुन अक्षर गाज रही है ४॥
बांसरी बीन की परखत धार। दरस राधास्वामी झांक रही है
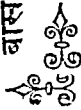
प्रे० वा० ४ नं० श० ४६ (शब्द ४८)

जुड़मिल के हंस सारे । दरशनको गुरुके आये ॥
बंगला अजब बनाया । शोभा कही न जाये ॥ १ ॥
जय आरती संवारी । हुई धूमधाम भारी ॥
निज भाग सब सरावत । औसर अधिक सुहाये ॥ २ ॥
सब मिलके शब्द गावत । भर २ पिरेम लावत ॥
नई २ उमंग जगावत । चहुं दिस हरष सुहाये ॥ ३ ॥

धंट और संख गाजें । मिरदंग ढोल वाजें
सारंग सितार वीना । धुन वांसरी जगाये ॥ ४ ॥
हुए गुरु दयाल परशन । सब को लगाया चरनन ।
वारत रहे हैं तन मन । राधास्वामी ओट आये ॥ ५ ॥

प्रे० बा० ४ नं० श० ३९ (शब्द ४९)

कोई दिन का है जग में रहिना सखी ।
ले सुध बुध घर की ओर चलो ॥ २ ॥ ॥ टेक ॥

यहां दूत दिखावें ज़ोर घना । और इन्द्री नाच नचावें मना ।
इन सब को दीजै वेग हटा । कुल काल करम का आज दलो
सतगुरु का खोज करो भाई । उन चरनन प्रीत धरो आई ।
प्रेमी जन से मेल मिलाई । सत संगत में उमंग रलो ॥ २ ॥
गुरु देवें घर का भेद बता । सुर्त शब्द का दें उपदेश सच्चा ।
तब घट में अपने धूम मचा । गुरु शब्द से चढ़कर जाय मिलो
फिर वहां से अधर चढ़ो प्यारी । धुन मुरली बीन सुनो सारी

मन माया काल रहे वारी । सतगुर की गोद में जाय पलो ॥४॥
सतपुर से भी फिर अधर चलो । घर अलख अगम के पार बसो
लख अचरज लीला मगन रहो । राधास्वामी चरन में जाय घुलो

सा० नं० श० (शब्द ५०) सफ़ा २४०

अंतर मुख बैठे एकांत । अभ्यास करे पावे मन शांत ॥ १ ॥
दो दल उलट गगन को धावे । मगन होय और नाद बजावे ॥२
जोत देख फिर देखे सूर । चन्द्र निहारे पावे नूर ॥ ३ ॥

सत्तलोक पहुंचे और बसे । सुन २ धुन तब सूरत हंसे । ४ ॥
तब सतगुरु की जानी महिमा । जिन प्रताप बाजी धुन बीना ५
अलख अगम और मिला अनामी । अब कहूं धन २ राधास्वामी ६

सा० न० श० २३ (शब्द ५१) सफ़ा ७३२

चमकन अब लागी घट में बिजली ॥
यह घाट लखे कोइ सूरत बिरली ॥
सतगुरु ने दृष्ट करी मुझ पर अब सगली ॥

तिल तोड़ लिया नभ पार चढ़ी ॥
जहं छाय रही नित बदली ॥ १ ॥
दृग झांक रही सुत सूर भई । छेदा दल कदली ॥
तन छोड़ चली । जड़ गांठ खुली ॥
अलपाय गई अपना गुरु अदली ॥ २ ॥
धुन सार मिली सुन पार चली । पाया पद अमली ।
खोला सुन द्वारा । झांका घर न्यारा

डार लई चौकी अब संदली ॥ ३ ॥
बैठी वर जानी धुन माहिं समानी । देख हंसन मंडली ॥
पिया अमृत प्याला । घट हुआ उजाला ।
छांट दई माया सब गदली ॥ ४ ॥
पद आदि मिली । धुन साथ रली । बुधि दूर हुई कमली ॥
महासुन्न मिली । लख भंवर गली ।
अब होय गई सतपद अचली ॥ ५ ॥

लख अलख सही । घर अगम रही ।
कुल फाल दली फिर चाल चली । पा कंवल कली ॥
राधास्वामी चरन पर जा मचली ॥ ६ ॥

प्रे० वा० २ नं० श० ५ (शब्द ५२) सफ़ा ४१०.

कोई करो गुरू का सत संग आज । टेक
जो जग संग तुम रहो लिपटाई । परमारथ का होय अकाज १।
जम के दूत सतावें तुमको । लख चौरासी नचावें नाच ॥ २ ॥

सतगुरु खोज करो उन सत संग ।
छोड़ जगत और कुल की लाज ॥३॥
प्रीत करो उन चरनन गहिरी । भक्ति भाव का पाओ साज ॥
शब्द भेद ले सुरत चढ़ाओ । त्रिकुटी जाय करो वहां राज॥५॥
राधास्वामी परम पुरुष दातारा । करें मेहर से पूरन काज ॥६॥
प्रे० बा० २ नं० श० १९ (शब्द ५३) सफ़ा ४४१
आज बाजे मुरलीया प्रेम भरी ॥ टेक

सतसंगी सब जुड़ मिल गावें। सतसंगिन सब उमंग भरी ॥
प्रेम रंग रही भींज सुरतिया। सुन २ धुन अब अधर चढ़ी ॥२॥
झलक जोत और सूर प्रकाशा। लख तन मन से होत छड़ी ३
निर्मल होय चली ऊपर को। सुन्न महासुन्न पार खड़ी ॥४॥
भंवरगुफ़ा में सोहंग बंसी। बाज रही मधुरी मधुरी ॥५॥
सत्त अलख और अगम परस कर।
राधास्वामी चरनन आन पड़ी ॥४॥

प्रे० बा० २ नं० श० २३ (शब्द ५४) सफ़ा ३४६

आज गाजै गगन धुन ओअं सार ॥ टेक ॥

नाद धाम से यह धुन आई । कीना जगत पसार ॥ १ ॥

ब्रह्म और पार ब्रह्म तिस नामा । तीन लोक में तिस उजियारा

सूक्षम पांच तत्त गुन तीनों । परघट हुए जस नूर की धार ३॥

घंटा संख शब्द उपजाये । माया फैली जग में झाड़ ॥ ४ ॥

यासे कोई न बचने पावे । बिन सतगुर आधार ॥ ५ ॥

मैं निज भाग सराहूं अपना। मिल गये राधास्वामी पुरुष अपार

प्रे० वा० २ नं० श० २४ (शब्द ५५) सफ़ा ४४७

कोई सुनो गगन धुन धर कर प्यार ॥ टेक ॥

श्याम कंज की राह अधर चढ़। निरख जोत उजियार ॥ १ ॥

सहसकंवल दल घंटा बाजे। और सुनो वहां संख पुकार ॥ २ ॥

बंक नाल होय त्रिकुटी फोड़ो। निरखो सूर उजियार ॥ ३ ॥

गरज मृदंग संग ओअं गाजे। तिरलोकी का मूल अधार ॥ ४ ॥
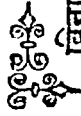
बिना प्रेम कोई राह न पावे । गुरु से पावे प्रेम प्यार ॥ ५ ॥
राधास्वामी सरन धार अब मन में । शब्द पकड़ जावो घटपार

प्रे० बा० २ नं० श० ३९ (शब्द ५६) सफा ४६९

आज नाचे सुरतिया गगन चढ़ी ॥ टेक ॥
सुन २ धुन सखियन को संग ले । ठुमक २ पग अधर धरी ॥१
ताल मृदंग बजै सारंगी । और मुरलिया रंग भरी ॥२॥
जुड़ मिल सब नाचें और गावें । राग रागिनी प्रेम भरी ॥ ३ ॥
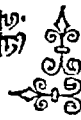
शब्दन की झनकार सुनावत । अमृत बरषा लगी झड़ी ॥ ४॥
हंस हंसिनी देख विलासा । झुंड २ सब आन खड़ी ॥ ५ ॥
अस लीला राधास्वामी दिखाई । दया मेहर मोपै करी बड़ी ॥६॥

प्रे० बा० २ नं० श० ६५ (शब्द ५७) सफा ५०५

आज आई सुरत हिये प्रेम जगाय । टेक ॥
दरशन करत भूल गई सुध बुध । सुरत रही चरनन अटकाय
मगन हुई सुन धुन झनकारी । दृष्ट गई रस रूप मुलाय ॥ २॥

ऐसी लीला निरखत निसदिन। सरत और मन ऊंचे को धाय ३
घंटा संख धुनी धुन दोई। गगन माहिं मृदंग बजाय ४
सारंग मुरली अदभुत बाजी। सनपुर में धुन बीन सुनाय ५
मेहर हुई कारज हुआ पूरा। राधास्वामी चरनन गई समाय ६

प्रे० बा० २ नं० श० ७२ (शब्द ५८) सफ़ा ५१६

जागरी मेरी प्यारी सुरतिया। गुरु चरनन में लागरी।
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ॥ टेक ॥

भूल भरम में वहु दिन वीते । अव उठ जगसे भागरी ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ १ ॥
दुर्लभ दर्शन मिले भाग से । नैन कंवल गुरु ताकरी ॥
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ २ ॥
तिल अंतर सुर्त जोड़ अधर चढ़ । सुन ले अनहद रागरी ।
मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ३ ॥
सहस कंवल होय धाय गगन पर । मारो काला नागरी ।

मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ४ ॥

सुन्न में जाय हुई अब निर्मल । छूटी संगत कागरी ॥

मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ५ ॥

राधास्वामी दीन दयाल मेहर से । दीना तोहि सुहागरी ६

मेरी प्यारी सुरतिया ॥ ६ ॥

प्रे० बा० २ नं० श० ३० (शब्द ५९) सफ़ा ५९४

भाव संग पकड़ गुरू चरना ॥ ॥ टेक ॥

काल करम तोहि नित भरमावें । छुटे न चौरासी फिरना ॥१॥
अब के दाव पड़ा मेरा सजनी । भटक छोड़ गहो गुरु सरना २
गुरु दयाल तोहि जुगत बतावें । सुन २ धुन घट में चढ़ना ॥ ३॥
घंटा संख सुने जाय नभ में । वहां से सुरत गगन भरना ॥ ४ ॥
सतगुरु दया गई दस द्वारे । हंसन संग केल करना ॥ ५ ॥
सत्तपुर्ष का दर्शन करके । राधास्वामी चरन सुरत धरना ॥६

प्रे० या० २ नं श० ४४ (शब्द ६०) सफ़ा ६०८

सुनो धुन घट में सूरत जोड़ ॥ टेक

गुरु चरनन में धार प्रीती । मन और इन्द्री जग से मोड़ ॥ १ ॥

प्रेम भक्ति की रीत सम्हारो । कर्म धर्म से नाता तोड़ ॥ २ ॥

बिरह उमंग ले घट में चालो । जोत रूप लख तिल को फोड़ ॥

त्रिकुटी जाय सुनी अनहद धुन । सुन्न गई संग मन का छोड़

राधास्वामी दया मिली सोहंग से ! धुनि सुनी सतपुर की ओर

मगन हुइ सतगुर दर्शन पाय । राधास्वामी रूप लखा । चित चोर

प्रे० वा० ३ नं० श० १५ (शब्द ६१) सफ़ा ३२

गुरु प्यारे के नैना ताक रहूं ॥ टेक ॥
द्रिष्ट जोड़ गुरु नैन कंवल में । सीतल होय धुन शब्द सुनूं
सुरत लगाय धसूं तिल द्वारे । घट में दौरा करत रहूं ॥ २ ॥
घंटा संख सुनूं नभ पुर में । जोत रूप लख गगन चढ़ूं ॥ ३ ॥
गुरु सरूप का दर्शन करके । सुन्न में हंसन संग मिलूं ॥ ४ ॥
भंवरगुफ़ा लख सत पुर धाऊं । अलख अगम के पार वसूं ५

राधास्वामी प्यारे मेरा भाग जगाया ।
सरन धार उन चरन पड़ूं ॥ ६ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श०३ (शब्द ६२) सफ़ा ३४९

बिरहन सुत तजत भोग । गुरु चरनन रतियां ॥ टेक ॥
सतसंग कर सुत उठी जाग । जगत किरत फीकी लाग ।
परमारथ का मिला भाग । धारा सत मतियां ॥ १ ॥
मन चित से हुई दीन । गुरु संग प्रेम भाव कीन ॥

सुरत शब्द जोग लीन । सुनती गुरु बतियां ॥ २ ॥
सुन २ धुन मगन होत । घट में श्रवटी अलख जोत ।
अमृत का खुला सोत । पी पी तिरपतियां ॥ ३ ॥
घुमड़ २ गरजत गगन । मन माया होवत दमन ।
सूर चांद तारा खिलन । निरखत हरखातियां ४ ।
सुन में स्नत हुई सार । महासुन मैदां निहार ॥
मुरली धुन गुफा सम्हार । लख सत्तपुरुष गतियां । ५ ।

अलख अगम के पार देख । राधास्वामी पद अलेख ।
जहां नहीं रूप रंग रेख । धुर पद परसतियां ॥ ६ ॥

प्रे० वा० ४ नं श० १२० (शब्द ६३)

सुरतिया उमंग भरी । होली खेलत आज नई ॥ १ ॥
जग का मैला रंग निकारत । निरमल धार बही ॥ २ ॥
हिये में निसदिन प्रीत बसावत । जग का मोह विसार दई ॥३
प्रेम रंग ले खेलत गुरु से । अचरज होली आज सही ४॥

सुरत रंगीली चढ़त अधर में। गगना ओर गई ॥ ५ ॥
गुरु सरूप का दर्शन करके। उमंग उमंग अब चरन पई ॥ ३ ॥
राधास्वामी दया निरख कर। हिये में मगन भई ॥ ७ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० ८ (शब्द ६४) सफ़ा ३५७

आवो रे जीव आवो आज। गहो राधास्वामी सरना। टेक।
आज ही निज करो काज। छोड़ो कुल जग की लाज।
भक्ति भाव लाय साज। चरनन चित धरना। १।

सत संग करो चित से चेत । गुरु चरनन में लावो हेत ।
राधास्वामी छिन २ दया लेत । स्रुत शब्द माहिं भरना ॥ २ ॥
मन और सुरत उठे जाग । नभ द्वारे से निकल भाग ।
घट में सुन २ शब्द राग । वहुर अधर चढ़ना ॥ ३ ॥
गगन ओर सुरत तान । त्रिकुटी धुन सुनी कान ।
गुरु के चरन परस आन । मन माया हरना ॥ ४ ॥
त्रिवेनी अश्नान कर । मगन होय स्रुत चढ़ी अधर

सत्तशब्द ध्यान धर । भौ सागर तरना ॥ ५ ॥
अलख अगम के पार जाय । प्यारे राधास्वामी दरस पाय ।
छिन २ रहे उन महिमा गाय । चरन सरन पड़ना ॥ ६ ॥

प्रे० बा० ४ नं० श० १६ (शब्द ६५)

धावोरे गुरु सरन सम्हारी ॥ ॥ टेक ॥
घट में निरख बहार नवीना । सुरत शब्द मत धारी ॥ १ ॥
सुन २ धुन सुत अधर चढ़ाओ । लखो जोत उजयारी ॥ २ ॥

वंकनाल धस त्रिकुटी पारा । सुन में जाय अच्छर धुन धारी ३
भंवरगुफा मुरली धुन सुन कर । सुरत हुई सतगुरु दरबारी ४
अलख अगम का मुजरा करके । राधास्वामी चरन सीस डारी
अचरज रूप निरख मगनानी । वाह २ प्रीतम वलिहारी ॥ ६ ॥

प्रे० वा० ४ नं० श० ३६ (शब्द ६६)

हेरी तुम कौन होरी । मोहि भरमावन हारी । ॥ टेक ॥
वहु दिन कीना संग तुम्हारा । दिन २ जग विच रही फसारी

अव मोहिं मिले गुरू दातारा । उन संग अपना काज सुधारी २
समझ तुम्हारी मैं नहिं धारूं । तुम अजान वहती मन लारी ३
मैं गुरू सीख धरूं हिरदे में । सुरत शव्द की कार कमारी ॥ ४
गुरु की दया ले नभ पुर धाऊं । निरखूं जाकर गगन अटारी
सतपुर सतगुर दर्शन करके ।
राधास्वामी चरन मिलत सुखियारी ॥ ६ ॥

सा० नं० श० १६ (शव्द ६७) सफ़ा ३७७

सुरत तू चढ़जा तुर्त गगन को। लखो जाय पहले जोत निर्गनको
छोड़ चल सकल पसार सरगुन को।
काट अब जड़ से फांस त्रिगुन को ॥ २ ॥
निर्गुन छोड़ चलो आगे को। पकड़ो जाय महानिर्गुन को ॥३॥
याको त्याग सुनो सुन्न धुन को। यों तुम धारो संत वचनको
वहां से चल पहुंचो महासुन को।
देखो आगे धाम सोंहंग को ॥ ५ ॥

सत्त नाम पद मिला सुरत को ।
अलख अगम जा परस चरनको ॥ ६ ॥
राधास्वामी कहत भेद निज घर को ।
मेट दिया अब आवागमन को ॥ ७ ॥

सा० नं. श० २५ (शब्द ६८) सफ़ा ५९४

आरत आगे राधास्वामी के कीजे ।
विमल प्रकाश अमी रस पीजे ॥ १ ॥

चित कर चंदन हित कर माला ।
आन चढ़ाऊं स्वामी दीन दयाला ॥ ३ ॥
गगन का थाल सुरत की वाती । शब्द की जोत जगे दिन राती
सहसकवल दल घंटा वाजे । वंकनाल धुन संख सुनीजे॥ ४ ॥
ओंकार धुन त्रिकुटी वाजे । सुन्न सिखर अक्षर धुन गाजे ॥५॥
भंवरगुफा ढिंग सोहंग वासा । सत्तलोक सतनाम निवासा
दास तुम्हारे स्वामी आरत गावें । चरन कंवल में वासा पावें७

सा० नं० २ श० ७ (शब्द ६९) सफ़ा ६९५

गुइयांरी लख मर्म जनाऊं । अब भेद अगम घट गाऊं ॥ १॥
स्रुत सहसकंवल पर लाऊं । लख नैन सैन दरसाऊं ॥ २ ॥
जोती की झलक झकाऊं । श्यामा तज सेत लखाऊं ॥ ३ ॥
फिर वंकनाल चढ़ आऊं । त्रिकुटी का राग सुनाऊं ॥ ४ ॥
सुन्नी जाय सुन्न समाऊं । सरवर में धमक चढ़ाऊं ॥ ५ ॥
हंसन से प्यार बढ़ाऊं । किंगरी अब नित्त बजाऊं ॥ ६ ॥

राधास्वामी नाम जपाऊं। नौका अब पार लगाऊं॥ ७ ॥

प्रे० वा० १ नं० श० ३ (शब्द ७०) सफ़ा ७

निज रूप का जोतू प्रेमी है। कर जुगत जगत से हो न्यारा।
बिन मेहर गुरू नहिं काज सरे। सतगुर का होजा निज प्यारा
गुरु पल २ तेरी सार करें। कर्मों का काटें सिर भारा।
और छिन २ तुझ पर दया करें। तेरी सुरत चढ़ावें औपारा ॥२
तब घट में देख बहार नई। जहां पचरंगी फुलवार खिली।

और जगमग २ जोत बली ।
घंटा और संख बजे न्यारा ॥ ३ ॥
सुखमन में होय नल बंक धसी । त्रिकुटी गुरु पद में जाय बसी
और ओंकार धुन संग रसी । जहां गर्जे मेघ होय अति भारा ॥
वहां से भी आगे चटक चली । धुन ररंकार में जाय पिली ॥
हंसन संग रलियां करत मिली । जहां अमृत बरसे चौधारा ॥
महासुन्न गई चढ़ भंवर रही । धुन सोहंग मुरली अधर लई ॥

फिर सतलोक सत शब्द रली। जहां बीन बजे धुन निज सारा

वहा से भी आगे सुरत चली।

घर अलख अगम को निहार रहा।

फिर राधास्वामी चरन मिली।

और पाय गई प्रीतम प्यारा ॥ ७ ॥

प्रे० बा० २नं ०शा० ६ (शब्द ७१) सफ़ा १२

आरती लाया सेवक पूर। चरन गुरु प्रेम रहा भरपूर ॥ १ ॥

हिये का लीना थाल सजाय । प्रीत की लीनी जोत जगाय॥२

आरती गावत सहित उमंग । सुरत मन भींज रहे गुरु रंग॥३

वजत रहा घट अनहद बाजा । संख और घंटा धुन साजा ॥४

सुनत रहा गरज मेघ मिरदंग । सुन्न में बाजी धुन सारंग

मधुर धुन मुरली बाज रहीं । अमरपुर बीना गाज रही ॥ ६ ॥

मेहर गुरु दीना यह साजा । सरन राधास्वामी पाय राजा ।७।

प्रे० बा० २ नं० श० ८ [शब्द ७२] सफ़ा १२९

राधास्वामी नाम जपो मेरे भाई। राधास्वामी नाम सुनो घट आई
हरदम चरनन सुरत लगाई। राधास्वामी गत तब कुछ नज़र आई
राधास्वामी ३ राधास्वामी ३ ॥ १ ॥

राधास्वामी चरन हिये में धारो। ध्यान धरत उन रूप निहारो
राधास्वामी करें तोहि जग पारो।
राधास्वामी नाम कभी न बिसारो।
राधास्वामी ३ राधास्वामी ३ ॥ २

राधास्वामी भेद नाद दरसावें ।
राधास्वामी घर की राह लखावें ।
मंज़िल के सब नाम बतावें । धुन और रूप भिन्न कर गावें ।
राधास्वामी ३ राधास्वामी ३ ॥ ३
राधास्वामी पिछली टेक छुड़ावें ।
राधास्वामी करम और भरम उड़ावें ।
राधास्वामी काल को दूर हटावें।करम काट जिव घर पहुंचावें

राधास्वामी ३ राधास्वामी ३ । ४ ।
राधास्वामी मन को मोड़ धरावें ।
राधास्वामी घट में सुरत चढ़ावें ।
श्याम कंज का पाट खुलावें । नभपुर जोत रूप दरसावें ॥
राधास्वामी ३ राधास्वामी ३ । ५ ॥
राधास्वामी सुरत गगन पहुंचावें । त्रिवेनी अश्नान करावें ।
महासुन्न के पार करावें । भंवरगुफ़ा मुरली सुनवावें ॥

राधास्वामी ३ राधास्वामी ३ ॥ ६ ॥
राधास्वामी संग अमरपुर आई । सत्तपुरुष धुन बीन सुनाई ।
अलख अगम के पार चढ़ाई । राधास्वामी २ दरशन पाई ।
राधास्वामी ३ राधास्वामी ३ ॥ ७ ॥

प्रे० बा० २ नं० श० १७ [शब्द ७३] सफ़ा २०६

सुरतिया झांक रही । गुरु दरश अनूप ॥ १ ॥
मन और सुरत साध कर घट में । नभ चढ़ निरखा जोत सरूप

अधर चढ़त पहुंची गगनापुर । जहां छांह नहिं खिल रही धूप
भंवरगुफ़ा के होगई पारा । निरखा जाय पुरुष सतरूप ॥ ४ ॥
बिन सतगुर यह धाम न पावे । जीव पड़े सब माया कूप ॥ ५
अलख पुरुष के दर्शन करके । अगम पुरुष निरखा कुल भूप ॥६
अचरज दर्शन राधास्वामी पाये । अकह अपार अनाम अरूप ७

प्रे० बा० २ नं० श० ३२ [शब्द ७४] सफ़ा २३२

सुरतिया चाह रही । सतगुरु से भक्ती दान ॥ १ ॥

उमंग अंग ले सन्मुख आई । गुरु चरनन में सुरत लगान ॥ २ ॥
भेद पाय सुनती अनहद धुन । गुरु सरूप का करती ध्यान ॥ ३ ॥
घट में देखत विमल विलासा । शब्द गुरू का पाया ज्ञान ॥ ४ ॥
प्रेम डोर गह चढ़ी अधर में । भंवरगुफ़ा मुरली धुन गान ॥ ५॥
सत्तपुरुप का दर्शन पाया । सत्त शब्द का मिला ठिकान ॥ ६॥
राधास्वामी सरन सम्हारी । होय गई अब अमन अमान ॥ ७॥

प्रे० बा० २ नं० श० ४६ [शब्द ७५] सफ़ा २५८

सुरतिया बांह गही । सतगुरु की सब बल त्याग ॥ १ ॥
मान बड़ाई जगत वासना । तज गुरु चरनन लाग ॥ २ ॥
भेद पाय निज नाम सम्हाला । सुमिर २ रही जाग ॥ ३ ॥
भजन करत निस दिन रस पावत । सुनत रागनी और धुन राग
करम धरम से नाता टूटा । छोड़ दई अब माया आग ॥ ५ ॥
त्रिकुटी होय सुन्न में पहुंची । छूट गई संगत मन काग ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन सम्हारे । जाग उठा मेरा पूरन भाग ॥७॥

प्रे० वा० २ नं० श० ६४ [शब्द ७६] सफ़ा २८१

सुरतिया धार रही। गुरु आरत प्रेम जगाय ॥ १ ॥
वस्तर भूषन बहु पहिनाती। नई २ शोभा देख हरखाय ॥ ॥
अनहद धुन घट शोर मचाया। घंटा संख मृदंग बजाय ॥ ३ ॥
हंस हंसनी जुड़ मिल आये। नाचें गावें उमंग बढ़ाय ॥ ४ ॥
प्रेम घटा घट उमड़त आई। अमीं धार चहुं दिस बरसाय ॥ ५॥
नूर पुरुष का घट में जागा। कोट सूर और चन्द्र लजाय ॥ ६

राधास्वामी मेहर करी अब सब पर।
चरन सरन दे लिया अपनाय ॥ ७ ॥

प्रे० बा०२ नं० श० ६५ [शब्द ७७] सफ़ा २८२

सुरतिया निरख रही । घट अंतर शब्द प्रकाश ॥ १ ॥
चित रहे दीन लीन गुरु चरनन । जग संग रहत उदास ॥ २ ॥
गुरु की दया परख कर मन में । गावत गुन निस बास । ३ ।
गुरु की मूरत हिये बसाई । निस दिन रहे गुरु पास ॥ ४ ॥

मन और सुरत जमावत तिल में ।

धावत अधर अकाश । ५ ।

जोत रूप लख चढ़त गगन पर । सुन्न में पाया अगम निवास

राधास्वामी दया करी अब मुझ पर ।

घट में दीना परम बिलास । ७ ।

प्रे० बा० २ नं श० ७० (शब्द ७८) सफ़ा २८८

सुरतिया मांग रही । सतगुर से अचल सुहाग ॥ १ ॥

दया धार सतगुरु मोहि भेटे । जाग उठा मेरा पूरन भाग ॥ ॥
गहिरी प्रीत लगी उन चरनन । जगत मोह टूटा ज्यों ताग ३॥
निज घर का मोहि भेद सुनाया । सुरत उठी अब धुन संग जाग
उमंग अंग ले चढ़त अधर में । छूटा मन का द्वेप और राग ।५
सुन २ धुन पहुंची दसद्वारे । काल देस अब दीना त्याग ॥६॥
राधास्वामी दया गई निज घर में ।
बैठ रही उन चरनन लाग । ७ ।

प्रे० वा० २ नं० श ० ७१ (शब्द ७९.) सफ़ा २८९

सुरतिया प्यार करत । सतगुरु से हिये धर भाव ॥ १ ॥
जगत प्रीत तज तन मन वारत । अस न मिलै फिर दाव ॥२॥
भेद पाय सुत अधर चढ़ावत । निरख उजार बढ़त घट चाव
सतगुर चरन प्रेम नया जागा । सहती बिरहा ताव ॥ ४ ॥
करम धरम सब छोड़े छिन में । माया काल दोऊ हट जाय ॥ ५
सनत नाद चाली गगना पुर । वहां से सूरत अधर लगाव ।६

सत्त शब्द से जाय मिली अब । आगे राधास्वामी चरन समाव।

प्रे० वा० २ नं० श० १३ (शब्द ८०) सफ़ा ४३४

कोइ परसो चरन गुरु चढ़ गगना ॥ टेक॥
प्रेम भक्ति की रीति सम्हालो । सतसंग में तुम नित जगना
माया घात बचाकर चालो । यामें काल करै ठगना ॥ ॥
सतगुरु चरनन प्रीत बढ़ाओ । शब्द जुगत में नित लगना
सतगुरु चरन ध्यान धर घट में । दरस पाय मन हुआ मगना

द्वारा फोड़ अधर को चाली । जोतरूप वहां नित तकना ॥५॥
काल करम दोउ रहे मुरझाई । अब मोहिं रोक नहीं सकना ६।
त्रिकुटी जाय मगन होय बैठी । राधास्वामी चरन माहिं पकना

प्रे० वा० २ नं० श० २६ (शब्द ८१) सफ़ा ४५०

आज गाजे सुरतिया अधर चढ़ी ॥ टेक ॥
गुरुपरताप चली अब घट में । सुरत शब्द की टेक धरी ॥१॥
तिलअंतर लख सेत उजारी । झिलमिल जोती नज़र पड़ी ॥

बंकनाल होय गई त्रिकुटी में । मान मोह मद सकल हरी ॥३॥
काल दिया मोहिं अधिक भुलावा । गुरू टेक से नाहिं टरी ॥४॥
सुन में जाय सुरत हुई निर्मल । बाजत जहां सारंग किंगरी ॥
भंवरगुफ़ा होय सतपुर धाई । भरी अमीं से सुर्त गगरी ॥६॥
राधास्वामी चरन निहारे । हुई सुरत अब अजर अमरी ॥७॥

प्रे० बा० २ नं० श० २९ (शब्द ८२) सफ़ा ४५५

आज आई सुरतिया भाव भरी ॥ टेक ॥

नैन कंवल का थाल बनाया। पलकन की वामें जड़ी छड़ी ॥१॥
दृष्टी की जहां जोत जगाई। तिल दिवला में आन धरी ॥२॥
शब्द गुरू संग आरत धारी। गावत सन्मुख आन खड़ी ॥३॥
काल और करम रहे थक नीचे। माया ममता सकल जरी ॥४
सुनमें निरखत हंस विलासा। गुरु संग उड़ी ज्यों उड़त परी ॥
सतपुर जाय करी फिर आरत। धुन बीना जहां बजै मधुरी ॥६
राधास्वामी दया दृष्टि अब डारी। आरत कर उन चरन पड़ी
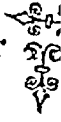
प्रे० वा० २ नं० श० ३४ (शब्द ८३) सफ़ा ४६२

कोई सुनें पिरेमी घट धुन सार। ॥ टेक ॥

इन्द्री भोग लगे सब फीके। मन आसा दई सकल बिसार ॥१

गुरु दर्शन में लागा मनुआं।

वचन सुनत हिये खिला गुलज़ार ॥ २ ॥

मेहर करी गुरु भेद बताया। निरख रही घट विमल बहार ॥३

घंटा संख सुनत धुन ओअंग। सुरत हुई तन मन से न्यार ४

सुन में जाय मिली हंसन से । निरखा सेत चन्द्र उजियार॥५॥
मुरली धुन सुन अधर सिधारी । पहुंची सतपुरुष दरबार ६
अलख अगम का झांक अस्थाना ।
राधास्वामी चरनन हुई बलिहार ॥ ७ ॥

प्रे० बा० २ नं० श० ४६ (शब्द ८४) सफ़ा ४७८

आज मांगे सुरतियां गुरु का संग ॥ टेक ॥
मोह जाल में रही फंसानी । नाहिं जाने कुछ भक्ती ढंग ॥१ ॥

... ...

ख़बर पाय राधास्वामी संगत की। हरख रही अंग अंग ॥ २॥
औसर पाय मिली सतगुरु से। बचन सुनत हिये बढ़ी उमंग
शब्द भेद ले जूझत मनसे। त्यागत सबही उचंग ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया मेहर ले साथा। मारत काल निहंग ॥ ५ ॥
सुनत शब्द धुन चढ़त गगन पर। बाज रही जहां नित मिरदंग
सतपुर जाय मिली सतगुर से।
राधास्वामी चरनन धारा रंग ॥ ७ ॥

प्रे० बा० २ नं० श० ४७ (शब्द ८५) सफ़ा ४७९.

राधास्वामी सरन निज कर धारी ॥ टेक ॥

भाग जगे राधास्वामी मोहिं भेटे ।

चरनन प्रीत लगी सारी ॥ १ ॥

निरख रही स्वामी रूप अनूपा । सोभा उसकी अति भारी २

मन और सुरत सिमट कर आये ।

छबि पर दृष्टि तनी न्यारी ॥ ३ ॥

हरष अधिक अब हिये समाया ।
चित हुआ चरनन बलिहारी ॥ ४ ॥
इत से मोड़ अधर को चाली । घंटा संख धूम डारी ॥ ५ ॥
जोत निरख त्रिकुटी को धाई ।
खिल गई घट कंवलन क्यारी ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया मेहर से अपनी ।
पहुंचाया सतगुरु वाड़ी ॥ ७ ॥

प्रे० वा० २ नं० श० २१ (शब्द ८६) सफ़ा ५५३

अधर चढ़ परख शब्द की धार ॥ टेक ॥

गुरु दयाल तोहि मरम लखावें। वचन सुनो उन हिये धर प्यार

बिरह अंग ले कर अभ्यासा। खोज करो तुम घट धुन सार २

गुरु सरूप को अगुवा करके। धुन सुन चलो कंज के पार ॥

सहस कंवल में घंटा बाजे। गगन माहिं सुन धुन ओंकार ॥ ४॥

सुन्न शिखर चढ़ महासुन्न पर। भंवरगुफ़ा मुरली झनकार ५

सत्त शब्द का धर कर ध्याना । सत्तलोक धुन बीन सम्हार ६

अलख अगम के पार निशाना ।

राधास्वामी प्यारे का कर दीदार ॥ ७ ॥

प्रे० बा० २ नं० श० २६ (शब्द ८७) सफ़ा ५५९

अधर चढ़ सुनी सरस धुन कान ॥ टेक ॥

मन और सुरत साधकर तन में ।

सम चित होय धरा गुरु ध्यान ॥ १ ॥
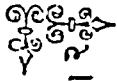
मोह राग जग भोग निकारा । तोड़ दिये सब मन के मान ॥ २ ॥
घंटा संख रहे बज नभ में । काल पुर्ष का जहां दीवान ॥ ३ ॥
जगमग होत जोत उजियारा । तिस पर सूरज लाल दिखान
सुन्न में जा धोये सब कल मल ।
मुरली धुन सुनी गुफ़ा ठिकान ॥ ५ ॥
वहां से भी फिर आगे चाली । सतपुर सुनी बीन धुन आन ।६।
सत्तपुर्ष की अज्ञा लेकर । राधास्वामी धाम बसान ॥ ७ ॥
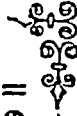
प्रे० बा० २ नं० श० २७ (शब्द ८८) सफ़ा ५६०

आज घिर आये बादल कारे । गरज २ घन गगन पुकारे ॥१॥
रिम झिम बरसत बूंद अमीं की ।
बिजली चमक घट नैन निहारे ॥ २ ॥
चहुं दिस बरखा होवत भारी । भींज रही स्रुत सुन झनकारे
उमंग २ स्रुत चढ़त अधर में । निरख रही घट जोत उजारे
घंटा संख घूम अब डाली । बंकनाल धस होगई पार ॥ ५ ॥
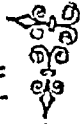
गुरु दर्शन कर अति हरखानी । पहुंची जाय सुन्न दस द्वारे

सत्त पुरुष के चरन परस कर ।

राधास्वामी अचरज दरस निहारे । ७ ।

प्रे० बा० ३ नं० श० ११ [शब्द ८९] सफ़ा २७

गुरु प्यारे चरन का लाऊं ध्यान ॥ ॥टेक॥

मन और सुरत जमा हर द्वारे । धुन घंटा सुन अधर चढ़ान

त्रिकुटी धुन सुन गगन सिधारूं । लाल रंग जहां सूर दिखान

सुनकी धुन सुन चढ़ी सुर्त आगे
मान सरोवर किये अश्नान । ३ ।

गुरु संगगई महासुन पारा । सुरली धुन सुनी गुफ़ा ठिकान ४।
सत्त शब्द धुन डोर पकड़ के । सतगुरु रूप करी पहिचान ।५।
अलख अगम धुन सुनती चाली । धाम अनामी निरखा आन
शब्द धार चढ़ निज घर आई । राधास्वामी चरन समान ।७

प्रे० वा० ३ नं० श० ८५ (शब्द ९०) सफ़ा ६४

गुरु प्यारे से दिन २ प्रीत बढ़ाय ॥ टेक ॥
लोक लाज और जगत भावमें । और भोगन संग रहा भुलाय
साधारन करे शब्द अभ्यासा । मन माया की परखं न पाय ॥
याते होय हुशियार जगत से । गुरु चरनन में प्रीत जगाय ॥
जस २ प्रीत बढ़े गुरु चरनन । घट में पावै रस अधिकाय ॥
मन माया का बंधन छूटै । सुन २ धुन सुरत गगन चढ़ाय ॥५॥
जोत उजियार लखे घट माहीं । सूर चन्द्र निरखत हरखाय ॥६

मुरली बीन सुनत हरखानी । राधास्वामी के दर्शन पाय ॥ ७

प्रे० बा० ३ नं श० ६२ (शब्द ९१) सफ़ा ८४

गुरु प्यारे के संग चलो महल अपने ॥ टेक ॥

कबलग मन संग दुख सुख सहना ।
छोड़ चलो यह जग सुपने ॥ १ ॥

गुरु के संग बांध जुग चालो । चरन कंवल में अब रचने ॥ २ ॥

सत संग कर सब भरम निकारो । विषय भोग दिन २ तजने

गुरु का शब्द कमावो हितसे । घर की ओर नित्त भजने
जोत निरख त्रिकुटी में धावो । काल करम से वहां बचने ॥
चंद्र मंडल लख गई गुफ़ा में । मुरली धुन जहां लगी बजने
सत्त अलख और अगम के पारा । राधास्वामी चरन सुरत सजने
प्रे० वा० ३ नं० श० ४ (शब्द ०२) सफ़ा १११

गुरुप्यारे का संग अमोला सुख का भंडार ॥ टेक ॥
जिन २ संग करा हित चित से । पाया उन घर भेद अपार ॥

पिया अमृत सार ॥ १ ॥

प्रेम प्रीत उन घट में जागी । राधास्वामी चरन उर धरे सम्हार
हुआ हिये उजियार ॥ २ ॥

जगत भाव और भोग वासना । मन से उन के दई निकार ॥
मल धोये झाड़ ॥ ३ ॥

निर्मल होय सुरत अलगानी । मगन हुई गुरु रूप निहार ॥
सुन धुन झनकार ॥ ४ ॥

नभ में होय गई त्रिकुटी में । वहां से पहुंची सुन मंझार ॥
सुनी सारंग सार ॥ ५ ॥
मुरली बीन सुनी धुन दोई । पहुंची अलख पुरुष दरबार ॥
गई अगम के पार ॥ ६ ॥
आगे राधास्वामी धाम निहारा । मिला वहां आनन्द अपार ॥
हुआ जीव उधार ॥ ७ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० ७ (शब्द ९३) सफ़ा ११६

गुरु प्यारे का देस अति ऊंचा। कस पहुंचूं धाय॥ टेक

बिन गुरु दया काज नहिं होई। सत संग में अब बैठूं जाय। चित चरन लगाय॥ १॥

सुन २ बचन सुरत मन मांजूं। गुरु मूरत का ध्यान लगाय। घट ताकूं जाय॥ २॥

शब्द जुगत गुरु दीन बताई। प्रेम सहित रहूं ताहि कमाय मन सुरत जमाय॥ ३॥

गुरु बल सूरत अधर चढ़ाऊं।
सहस कंवल सुनूं घंटा जाय। फिर गगन चढ़ाय। ४।
सुन्न और महासुन्न के पारा।
गुफ़ा परे सतपद दरसाय। धुन बीन सुनाय ॥५॥
उमंग जगाय चढ़ी आगे को। अलख अगम का दरस दिखाय
तिस पार चलाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी रूप निरख मगनानी। महिमां वाकी कोसके गाय

मैं रही शरमाय ॥ ७ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० १७ (शब्द ९४) सफ़ा १३३

गुरु प्यारे से प्रीत लगाना । मन सरधा लाय ॥ टेक ॥

जगत भोग सब जान असारा । इन से हट सतसंग समाय गुरु बचन कमाय ॥ १ ॥

भूल भरम और करमा धरमा । इन से नहिं कुछ काज सराय सब दूर बहाय ॥ २ ॥

उमंग सहित गुरु सेवा धारो । मन और स्रुत धुन संग लगाय
गुरु रूप धियाय ॥ ३ ॥
मेहर से घट में मिले अनंदा । दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ाय
नई उमंग जगाय ॥ ४ ॥
दया करें गुरु सुरत चढ़ावें । सहसकंवल लख त्रिकुटी धाय ।
गुरु शब्द सुनाय ॥ ५ ॥
सुन्न में जाय सुनी धुन सारंग । सूरज सेत भंवर दरसाय

सोहंग धुन गाय ॥ ६ ॥
सतगुरु रूप लखै सतपुर में । आगे राधास्वामी धाम दिखाय । निज चरन समाय ।

प्रे० वा० ३ नं० श० २५ (शब्द ९५) सफ़ा १४६

गुरु प्यारे की सरन सम्हारो । धर मन परतीत ॥ टेक ॥
बिना सरन कोई बचे न भाई । सरन बिना कोई घर नहिं जाई तज माया तीत ॥ १ ॥

जिन २ सरन गही गुरु पूरे । उनहीं जाय लखा पद मूरे ।
ले संतन सीत ॥ २ ॥

जो तुम निज घर जाना चाहो । सतगुरु से ले जुगत कमावो
कर मनुआं मीत ॥ ३ ॥

दिन २ चरनन प्रेम बढ़ाओ । तन मन धन गुरु भेंट चढ़ाओ
यही है भक्ती रीत ॥ ४ ॥

राधास्वामी दया दृष्टि से हेरें । मन और सुरत दोऊ तेरे घेरें

दे चरनन प्रीत ॥ ५ ॥

शब्द संग सुत अधर चढ़ावें । नभ लख गगन सिखर पहुंचावें

मन माया जीत ॥ ६ ॥

मुरली धुन सुन सतपुर धाई । अलख अगम के पार चढ़ाई

गाऊं राधास्वामी गीत ॥ ७ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० ८ (शब्द २६) सफ़ा १६१

सतगुर प्यारे ने दया कर मोहि लीन उबारी हो ॥ टेक ॥
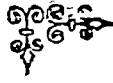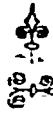
जन्म २ भोगन में भूली । ऊंच नीच माया संग झूली ।
रही दुखियारी हो ॥ १ ॥
इस औसर गुरु सतसंग पाया । मेहर हुई मन चरन समाया
बचन गुरू उर धारी हो॥ २ ॥
जग का रंग देख सब मैला । प्रेमी जन संग कीना मेला ।
भोग लगे सब खारी हो ॥ ३ ॥
उमंग २ सेवा को धाई । घेर फेर मन शब्द लगाई ।
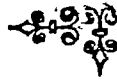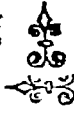
हुई गुरु प्यारी हो ॥ ४ ॥

अधर चढ़त गई द्वारे दस में। भींज रही स्रुत अमृत रसमें।

दूर हुए दुख सारी हो ॥ ५ ॥

सोहंग मुरली धुन सुन पाई। बीन सुनी सतपुर में जाई।

लखी गुरु लीला भारी हो ॥ ६ ॥

अलख अगम गई सुरत प्रवीनी। राधास्वामी चरन हुई लौलीनी

हुई सब से अब न्यारी हो ॥ ७ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० २० (शब्द ९७) सफ़ा १८२

सतगुरु प्यारे ने दिखाई गगन अटारी हो । ॥ टेक ॥

जग परमारथ संग भुलानी । तीरथ वर्त्त रही लिपटानी ।

करम चढ़ाये भारी हो ॥ १ ॥

निज घरका गुरु पता बताई । पिया मिलन की गैल लखाई ।

सुरत शब्द मत धारी हो । २ ।

सतसंग करत भरम सब भागे । कर अभ्यास सुरत मन जागे

शब्द सुना घनकारी हो । ३ ।
गुरु चरनन में बाढ़ी प्रीती । सुरत शब्द की हुई परतीती
त्रिकुटी ओर सिधारी हो ॥ ४ ॥
गुरु सरूप गगना में देखा । काल करम का मिटगया लेखा
सुरत हुई गुरु प्यारी हो ॥ ५ ॥
सुन्न की धुन सुन सुरत चढ़ाई । मन माया से खूंट छुड़ाई
हंसन संग करी यारी हो ॥ ६ ॥

मानसरोवर किये अशनाना। सत्तपुरुष का धारा ध्याना॥
राधास्वामी काज सुधारी हो॥ ७।

प्रे० बा० ३ नं० श० २२ (शब्द ९८) सफ़ा १८१

सतगुरु प्यारे ने गिराया काल कराला हो॥ टेक॥
सुन २ महिमां सतसंग केरी। दरशन कर हुई चरनन चेरी॥
गुरु लीन सम्हाला हो॥ १॥
नाद की महिमां गुरु मोहि सुनाई।

जस उतपत्ती हुई सब गाई ॥
लखा गुरु देस निराला हो ॥ २ ॥
ताके नीचे काल पसारा । माया ब्रह्म और तिरगुन धारा ॥
सब रचना दुख साला हो ॥ ३ ॥
गुरु ने निकसन जुगत बताई । शब्द भेद दे सुरत लगाई ॥
लखा जोत जमाला हो ॥ ४ ॥
त्रिकुटी होय गई दसद्वारे । भंवरगुफ़ा सतलोक निहारे ॥

मिले पुरुष दयाला हो ॥ ५ ॥

काल बिघन गुरु दूर करायें । मन माया भी रहे मुरझाये ॥

गुरु कीन निहाला हो ॥ ३ ॥

पुरुष दया कर अंग लगाई । बल अपना दे अधर चढ़ाई ॥

जहां राधास्वामी तेज जलाला हो ॥ ७ ॥

प्रे० वा० ३ नं० श० ४३ (शब्द ९९) सफ़ा २२२

सतगुरु प्यारे ने सिंगारी सुरत रंगीली हो ॥ टेक ॥

जग में सुरत रही मेरी अटकी। करम भरम में बहु बिधि भटकी
गह रही टेक हठीली हो ॥ १ ॥
वचन सुनाय गढ़त गुरु कीनी। घटका भेद मेहर कर दीनी
धुनशब्द सुनाई रसीली हो ॥ २ ॥
सुन २ धुन सुत नभपुर धाई। गगन फोड़ गई सुन्न में छाई ॥
होगई आज छबीली हो ॥ ३ ॥
विघन सब हि गुरु दूर कराई। काल करम दोऊ रहे लजाई ॥
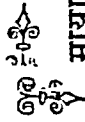
माया भई शरमीली हो ॥ ४ ॥
सुन्न शिखर पर चढ़ी सुत विरहन ।
भंवर गुफ़ा धुन पड़ी अब सरवन ॥
छोड़ दिया मठ नीली हो ॥ ५ ॥
सतपुर जाय किया अब वासा । हंस करें जहां नित्त विलासा
सुनी धुन बीन सुरीली हो ॥ ६ ॥
यहां से सूरत अधर चढ़ाई । राधास्वामी दरस पाय हरखाई
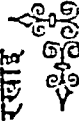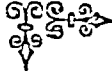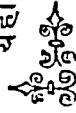
होगई आज सजीली हो ॥ ७ ॥

प्रे० बा० ३ न० श० ४४ (शब्द १००) सफ़ा २२४

सतगुरु प्यारे ने पढ़ाई घट की पोथी हो ॥ टेक ॥

जगत भाव में रही भुलानी । बाहर मुख जुगती रही कमानी

किरत करी सब थोथी हो ॥ १ ॥

जब से सतगुरु संग लगाई । सार बचन मोहिं दिये समझाई

जाग उठी सुत सोती हो ॥ २ ॥

सतसंग करत विकार घटाती । घट धुन में नित सुरत लगाती,
दिन २ कलमल धोती हो ॥ ३ ॥
गुरु चरनन बढ़ता अनुरागा । जग भोगन से चित वैरागा ॥
धुन में सूरत पोती हो ॥ ४ ॥
दया हुई सुत नभ पर चढ़ती । घंटा और संख धुन सुनती ॥
निरख रही घट जोती हो ॥ ५ ॥
वंक नाल धस त्रिकुटी धाई । काल करम दोऊ रहे मुरझाई ॥

माया सिर धुन रोती हो ॥ ६ ॥

सत्तपुरुष के चरनन लागी । राधास्वामी धुन संग सूरत पागी

चली प्रेम क्यारी बोती हो ॥ ७ ॥

प्रे० बा०३ नं० श० ४ (शब्द १०१) सफ़ा २३२

अहो मेरे प्यारे सतगुरु प्रेम दान मोहिं दीजे ॥

दुख सुख बहु भरमावत ॥ टेक ॥

दया करी मोहिं संग लगाया । मारग का मोहिं भेद जनाया ॥

घट शब्द जगावत ॥ १ ॥
प्रेम विना मन होय न सूरा । संसै भरम नहिं होवत दूरा ॥
धुनरस नहिं पावत ॥ २ ॥
याते सतगुरु दया विचारो । प्रेम दान मोहिं देव कर प्यारो
सूरत अधर चढ़वता ॥ ३ ॥
शब्द २ धुन सुन रस पावत । अधरजाय निज भाग जगावत
गुरु गुन उमगत गावत ॥ ४ ॥

राधास्वामी मेहर से पहुंची सुन में ।
वहां से चल लागी सतधुन में ।
सतपुर बीन सुनावत ॥ ५ ॥
अलख लोक जाय डाला डेरा । अगम लोक जाय किया बसेरा
राधास्वामी धाम दिखावत ॥६॥
राधास्वामी चरन जाय लिपटानी । प्रेम बढ़ा अब कहां समानी
आनंद बरना न आवत ॥ ७ ॥

प्रे० वा० ३ नं० श० ३ (शब्द १०२) सफ़ा २९८

केसे चलूंरी अधर चढ़ सुन नगरी। ॥ टेक ॥

मन मेरा चंचल चित्त मलीना। गैल कठिन कस धरूं पगरी

गुरु दयाल बिन कौन सहाई। उनके चरन में रहूं लगरी॥२॥

वे दयाल जब दया विचारैं। तब सुरत चढ़े अधर डगरी ॥ ३

काल करम को दूर हटावैं। और निकारैं माया मगरी ॥ ४ ॥

सहस कंवल चढ़ त्रिकुटी धाई।

सुन में हंसन संग पगरी ॥ ५ ॥
मुरली धुन सुन आगे चाली । महा काल भी रहा थकरी ॥
पुरष दया ले अधर सिधारी
राधास्वामी चरन माहिं जकड़ी ॥ ७ ॥
प्रे० बा० ३ नं० श० ५ [शब्द १०२] सफ़ा ३४४
नौ द्वारन में सब कोइ बरते । दसवां निरखे विरला कोय ॥१
जिन को मेहर से सतगुरु भेटें । तिन जाना यह मारग गोय

भेद पाय उन जुगत कमाई । निस दिन सूरत शब्द समोय ३
घंटा संख सुनत घट चाली । गरज मृदंग सुनी धुन दोय ॥ ४
माया काल बहु दाव चलाए ।
गुरु बल लीनी सूरत धोय ॥ ५ ॥
निरमल होय गई दस द्वारे । गुफ़ा परे निरखा पद सोय ॥ ६
राधास्वामी प्यारे दया करी अब । चरनन में लई सुरत मिलोय

प्रे० बा० ३ नं० श० ३ (शब्द १०४) सफ़ा ३७७

निज घट में खोज पिया को सखी ।
क्यों भरमें जगत उजाड़ारी ॥ टेक ॥
सतगुरु से ले घट भेद सही । कर सतसंग उनका साराारी ।१।
तन मन और इन्द्री रोक चलो । धर सत गुरु चरनन प्याराारी २
धुन घट में सुन २ अधर चढ़ो । जहां बहती निर्मल धाराारी ३
कलमल धोय हुई सुत निरमल । लखती जोत उजाराारी ॥४॥
बंक पार धुन गगन सुनी । सुन में जाय निरख बहाराारी ॥५॥

महासुन्न परे लख भंवर गुफा। सत पुर सत दरस निहारारी
अलख अगम के पार लखा। राधास्वामी धाम नियारारी ॥७॥

प्रे० बा० ३ नं० श० ६ (शब्द १०५) सफा ३८९

जग भाव तजो प्यारी मनसे। सतसंग में चित्त धरोरी ॥टेक॥
सब करम धरम दुख दाई। इन संग क्यों भरम बहोरी ॥१॥
तज टेक पुरानी प्यारी। राधास्वामी सरन गहोरी ॥ २ ॥
ले गुरु से शब्द उपदेशा। सुत तिल में आज भरोरी ॥ ३ ॥

धुन सुन २ होत मगन मन । गुरु चरनन भाव बढ़ोरी ॥ ४ ॥
सुत उलटत नभ चढ़ झांकी । घंटा और संख सुनोरी । ५ ।
चढ़ गगन अधर को धाई । धुन मुरली बीन बजोरी ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु प्यारे । उन चरनन जाय पड़ोरी ॥ ७ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० ९ (शब्द १०६) सफ़ा ३९३

चरनन में चित्त लगावो । जग आसा दूर हटावो ॥ १ ॥
तव ध्यान रूप रस पावो । धुन शब्द सुनत हरखावो ॥ २ ॥

इन्द्री रस भोग घटावो । मन चंचल थीर करावो ॥ ३ ॥
गुरु चरनन प्रेम बढ़ावो । धुन संग सुत अधर चढ़ावो ॥ ४ ॥
लख जोत सूर और चन्दा । धुन मुरली गुफ़ा सुनावो ॥ ५ ॥
सतपुर में बीन बजावो । फिर अलख अगम को धावो ॥ ६ ॥
ले मेहर दया सत गुरु की । राधास्वामी चरन समावो ॥ ७

प्रे० बा० ३ नं० श० ५ (शब्द १०७) सफ़ा ४५५

सखीरी ऐसी होली खेल । जामें प्रेम का रंग बहेरी ॥ १ ॥

सतगुरु दयाफोड़ गगन द्वारा। जोत सरूप लखेरी ॥ २ ॥
बंकनाल धस म चढ़ झ पर। मन और सुरत चढ़ैरी ॥ ३ ॥
घंटा संख अधर को धाई शी बीन बजेरी ॥ ४ ॥
कोट सू मी सतगुरु प्यारे। सतगुरु मुखड़ा जाय लखेरी ५
काल प्रे० बा० ३ दूर निकारे। ज़ोर इनका अब कौन सहेरी ६
राधा न में दयाल ऐसी होली खिलावें। उन महिमा कौन कहेरी

प्रे० बा० ३ नं० शब्द ११ (शब्द १०८) सफ़ा ४६६

उलट पलट कर खेली होली । अनहद धुन घट अंतर बोली ॥१

उमंग अबीर गुलाल प्रेम का । गुरु पर डारा भरभर झोली ॥२

मन और सुरत चढ़े गगना पर । माया ममता घट से डोली ॥४

गुरु दरशन कर हुई मगनानी । अब नहिं देत काल झक झोली

आगे चढ़ पहुंची दस द्वारे । सुन्न शहर की धुन लई तोली ॥५

भंवरगुफा सतलोक अटारी । चढ़ के चली अब शब्द खटोली

अलख अगम के पार चढ़ाई । राधास्वामी चरन अब मिले अमोली

प्रे० बा० ३ नं० श० १८ (शब्द १०९.) सफ़ ४७५

सुरत आज खेलत फाग नई । ॥ टेक ॥

शब्द रूप हिरदे धर अपने । गुरु रंग राच रही ॥ १ ॥

धुन की डोर पकड़ घट चढ़ती । मान ईरखा सकल दही ॥ २॥

राधास्वामी बचन लगें अति प्यारे । चरनन लाग रही ॥ ३ ॥

खेलत २ गुरु पद पहुंची । रंग गुलाल बही ॥ ४ ॥

सुन्न सिखर चढ़ भंवरगुफा पर । सत्तनाम की मेहर लई ॥ ५॥

हंसन साथ मिली अब रंग से । अलख अगम के पार गई ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल दया निज धारी । प्रेम का दान दई ॥ ७ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० २१ (शब्द ११०) सफ़ा ४७९.

गुरु संग खेलन फाग चली । खिलत मेरे घट में कंवल कली ॥१
जोत की लई पिचकार सम्हार । शब्द रंग बरखा होत अपार २
चांद और सूरज कुम २ लाय · विमल घट त्रिकुटी रंग भराय ३
सुन्न में भरती सुरत अबीर । महासुन चढ़ती धरकर धीर ॥४।

भँवर चढ़ मुरली बीन बजाय । सत्त पुर होली खेली जाय ॥५

आरती गाई हंसन संग । धारिया सत्तपुरुष का रंग ॥ ६ ॥

उमंग कर राधास्वामी धाम चली ।

सरन गह राधास्वामी चरन रली ॥ ७ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० २३ (शब्द १११) सफ़ा ४८१

खेल ले सतगुरु संग तू फाग । सखीरी तेरा भला बना है दाव

रितु फागुन भागन से आई । छोड़ सोवना तू उठ जाग ॥ २ ॥

इंद्री भोग चुरावत चित को। सहज २ उनको तज भाग ॥ ३
सुरत अबीर गुलाल शब्द का। प्रेम रंग ले गुरु पद लाग ॥ ४
वहां से चल पहुंची दस द्वारे। करम भरम सब दीने त्याग ॥५
भंवर गुफा होय पहुंची सतपुर। मुरली बीन सुनावत राग ॥
राधास्वामी चरन परस हिल मिल कर। गावत मंगल राग ।७

प्रे० वा० ३ नं० श० ४ (शब्द ११२) सफ़ा ५२५

अमीं की बरखा हुई भारी। भीज रही अंतर सुत प्यारी ॥ १॥

सजी जहां तहां कंवलन क्यारी । शब्द गुल फूली फुल वारी २
वासना त्यागी संसारी । मगन होय चढ़त अधर प्यारी ॥ ३ ॥
गगन गुरु दरशन कीनारी । हुआ मन चरन अधीनारी ॥ ४ ॥
सुन्न चढ़ निरखी उजियारी । मिली हंसन संग कर यारी ॥ ५
भंवर धुन लाग रही तारी । मिला फिर सत्तशब्द सारी ॥ ६ ॥
दया राधास्वामी की भारी । सरन दे चरन लगायारी ॥ ७ ॥

प्रे० वा० ३ नं० श० १४ [शब्द ११३]सफ़ा ५५०

मेरे लगी प्रेम की चोट। विकल मन अति घबरावे ॥
कोइ कछू कहे समझाय। चित्त में नेक न आवे ॥ १ ॥
मात पिता बहु कहें। बहन और भाई भतीजे ॥
मूरख हैं सब लोग। प्रीत उन दिन २ छीजे ॥ २ ॥
मैं सतगुर बल धार। चरन में प्रीत बढ़ाता ॥
जग से होय निरास। रूप गुरु निस दिन ध्याता ॥ ३ ॥
दया करी गुरु देव सुरत अब धुन में लागी ॥

घट में देख बिलास सरन में दृढ़ कर पागी ॥ ४ ॥
राधास्वामी दीन दयाल । दया कर मोहिं अपनाया ॥
करम भरम को काट । त्रिकुटी पार पहुंचाया ॥ ५ ॥
सुन्न महासुन होय । गई स्रुत सौहंग पासा ॥
आगे सत पद परस । अलख लख अगम निवासा ॥ ६ ॥
पहुंची राधास्वामी धाम । मेहर से सतगुर केरी ॥
दरशन राधास्वामी पाय । दया उन छिन २ हेरी ॥ ७ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० ७ (शब्द ११४) सफ़ा ६२५

करो सतसंग सतगुर का । भेद घर का वहां पाओ ।
धार परतीत चरनन में । दीन दिल सरन में धाओ ॥ १ ॥
समझ कर जगत में बरतो । फंसो नहिं जाल में उसके ।
रहो हुशियार इन्द्रियन से । भोग संग धोखा मत खाओ ॥ २ ॥
शब्द का भेद ले गुरु से । करो अभ्यास तुम निस दिन ॥
गुनावन जगत की तजकर । चित्त से ध्यान धुन लाओ ॥ ३ ॥

जुगत से रोक मन घट में। ध्यान गुरु रूप का धारो॥
सुमिर राधास्वामी नाम हरदम।
गुरू गुन नित्त तुम गावो॥ ४॥
सुरत मन तान गगना में। बजे जहां संख और घंटा॥
सुनो फिर शब्द ओंकारा। सुन्न चढ़ मानसर न्हावो॥ ५॥
भंवर गढ़ जा सुनी बानी। सत्तपुर जाय हुलसानी॥
अलख और अगम के पारा। अनामी धाम चढ़ जावो॥ ६॥

मिली राधास्वामी से प्यारी । सरावत भाग निज अपना ॥
भटक में वहु जनम वीते । पड़ा मेरा ऐसा अव दावो ॥ ७ ॥

प्रे० वा० ४ नं० श० १० (शब्द ११५)

आज मम भाग जगे । गुरु सतसंग आय मिली ॥ ॥ टेक ॥
सुन के सतगुरु के वचन । होगई मैं आज निहाल ॥
संग में प्रेमीजनों के मैं । मगन होय रली ॥ १ ॥
भेद सतगुरु ने दिया । ऊंचे से ऊंचे देसा ।

और मत जितने हैं। उनका रहा सिद्धांत तली ॥ २॥
शब्द घट २ में रहा बोल। सुनो दिन और रात ॥
भाग बड़ वुह है जो सुनता है। उसे चित से अली ॥ ३ ॥
ध्यान गुरु आज सम्हालो। सुनो धुन को घट में ॥
श्याम द्वारे के परे नभ में। लखो जोत बली ॥ ४ ॥
त्रिकुटी जाय मिला अदभुत दर्शन गुरु का।
माया और काल की ताक़त। यहां सब आज गली ॥ ५॥

सुन्न के पार भंवर में गई । सूरत चढ़ कर ॥
मुरली और बीन सुनी । सत्तपुरुष पास पली ॥ ६ ॥
गुरु से ले भेद चली आगे को सूरत प्यारी ॥
राधास्वामी का दरस पाय के धुरधाम वली ॥ ७ ॥

प्रे० बा० ४ नं० श० ११ (शब्द ११६)

आज सतगुरु की सरन भाग से मैंने पाई ॥
शब्द धुन बाज रही । चांदनी घट में छाई ॥ १ ॥

करम और धरम भरम जानके । सब छोड़ दिये ॥
टेक पिछलों की तजी । प्रेम गुरू में लाई ॥ २ ॥
सुन के सतगुर के वचन । पिया अमी रस सारा ।
बैठ सतसंग में परतीत हिये में आई ॥ ३ ॥
गुरु से ले शब्द का उपदेश । किया अभ्यासा ।
घंटा और संख सुने । जोत लखी नभ जाई ॥ ४ ॥
आगे चढ़कर के सुनी त्रिकुटी में धुन मिरदंग ॥

सुन में हंसन से मिली । रागनी नई २ गाई ॥ ५ ॥
संग सतगुर के चली । जाय मिली सोहंग से ॥

सतपुरुष मेहर करी । बीन की धुन सुनवाई ॥ ६ ॥
लख अलख आगे अगम । लोक का निरखा नूरा ॥
राधास्वामी का दरस पाय । चरन में धाई ॥ ७ ॥
प्रे० वा० ४ नं० श० १२ (शब्द ११७)

चेतोरे जग काम न आवे ॥ टेक ॥

यह जग चार दिनों का सुपना । कोई थिर न रहावे ॥ १ ॥
पता भेद तुम्हरे निज घर का । गुरु बिन कौन बतावे ॥ २ ॥
यह निज घर है राधास्वामी धामा ।
शब्द पकड़ सुर्त जावे । ३ ।
शब्द भेद लेकर सतगुर से । धुन सुन अधर चढ़ावे ॥ ४ ॥
चढ़ २ पहुंचे दसवें द्वारा । बेनी में पैठ अन्हावे ॥ ५ ॥
सतपुर जाय मिलै सतगुर से । अलख अगम को धावे ॥ ६ ॥
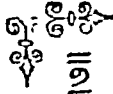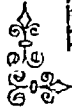
सतगुरु दया काज हुआ पूरा। राधास्वामी चरन समावे ॥७॥

प्रे० बा० ४ नं० श० १५ [शब्द ११८]

चेतो रे घर घाट सम्हारो ॥ । टेक ।

या देही संग क्यों दुख सहना। निज सुख घर की ओर सिधारो

बिन सतगुरु को भेद बतावे। उनका संग करो घर प्यारो

करम धरम सब भरम हटाकर।

गुरु का वचन हिये बिच धारो। ३।
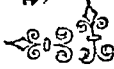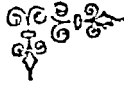
शब्द भेद और जुगत चलन की ।
ले गुरु से घट अधर पधारो ॥ ४ ॥
घंटा संख सुनी धुन दोई । गगन माहिं गुरु रूप निहारो । ५।
निर्मल हुइ सुन सारंगबानी । मुरली सुन धुन बीन सम्हारो ६
सुन २ बतियां अलख अगमकी । राधास्वामी चरन करो दीदारो

प्रे० बा० ४ नं० श० २४ (शब्द ११९)

प्रेमी जइयोरे सतसंग में । लीजो सुरत जागय ॥ टेक

बिन सतसंग मन चेते नाहीं । सतगुरु प्यारे की सरनाय १
अमृत रूपी बचन गुरू के । सुन २ रहे चरन लौ लाय ॥ २ ॥
शब्द भेद लेकर सतगुरु से । मन और सूरत अधर चढ़ाय ३
सुन २ धुन सूरत मगनानी । मन से लीना खूंट छुड़ाय ॥ ४ ॥
सतगुरु लार चली फिर प्यारी । सत्त लोक किया आसन जाय
सत्तपुरुष का दर्शन पाया । हंसन संग लिया मेल मिलाय ६
वहां से राधास्वामी धाम सिधारी

मगन होय निज भाग सराय ॥ ७ ॥

प्रे० वा० ४ नं० श० ८९ (शब्द १२०)

जगत भोग मोहिं नेक न भावें

मैं तो सतगुरु ढूंढूंगी ॥ ॥ टेक ॥

सतगुरु की महिमां अति भारी। विन उनके कोइ जाय न पारी

मैं तो उनही को सेऊंगी ॥ १ ॥

सतसंग कर गुरु चरन धियाऊं। सुन २ वचन हिये उमगाऊं

मैं तो उनही की जुगत कमाऊंगी ॥ २ ॥
भाग जगे सतगुरु मिले आई । दीन देख मोहिं लिया अपनाई
चरनन प्रीत बढ़ाऊंगी । ३ ।
ले उपदेश सुनूं घट धुन को । घेर और फेर लगाऊं मनको
गगन ओर नित धाऊंगी ॥ ४ ॥
गुरु पद परस सरोवर न्हाऊं । भंवरगुफा सोहंग धुन गाऊं।
सतपुर बीन बजाऊंगी ॥ ५ ॥

अलख पुरुष की आरत धारूं। अगम पुरुष का रूप निहारूं।
राधास्वामी चरन समाऊंगी ॥ ६ ॥
सतगुरु दया परम पद पाया। राधास्वामी धाम अजब दरसाया
छिन २ उन गुन गाउंगी ॥ ७ ॥

प्रे० वा० ४ नं० श० ५३ (शब्द १२१)

हे मेरे मित्रा मनुआं क्यों न चले निज देस ॥ टेक ॥
या तन में नित दुख सुख सहना। छोड़ो यह परदेस ॥ १ ॥

बिन सतसंग घर भेद न पावे। ले गुरु से उपदेश ॥ २ ॥
शब्दजुगत ले नित्त कमावो। काटो करम कलेश ॥ ३ ॥
सुरत चढ़ाय गगन में धावो। छूटे माया लेस ॥ ४ ॥
मानसरोवर कर अश्नाना। धारो हंसा भेस ॥ ५ ॥
भंवरगुफ़ा की बंसी बाजी। दयाल देस का मिला संदेस ॥६॥
सतलोक सतपुरुष रूप लख। राधास्वामी चरन करो परवेश

प्रे० बा० ४ नं० श ६८ (शब्द १२२)

मेरे प्यारे बहिन और भाई। क्यों ग़फ़लत मे रहो सोते।
गुरु लेव सम्हारी ॥ टेक ॥
या जग में नित रहना नाहीं। इक दिन तन तज जाना।
टुक वहां की बात विचारी ॥ १ ॥
सतगुरु वहां के भेदी कहियन। मिल उन से लेव समझौती।
निज घर वे देहिं लखारी ॥ २ ॥
सतसंग उनका करो चित लाई।

वचन अमोल हिये बिच धारो ।
तोहि करदें जग से न्यारी ॥ ३ ॥
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे ।
भेद उनका दें घट में सारा ।
सतशब्द की जुगती धारी ॥ ४ ॥
मन और सुरत अधर नित धावें ।

सुन २ धुन घट झनकारी ॥
पावे रस आनंद भारी ॥ ५ ॥
गुरु पद परस गई सतपुर में । मधुर बीन धुन सुनी सारी ॥
पद अलख अगम निरखारी ॥ ६
वहां से चल पहुंची निज धामा ।
प्योर राधास्वामी दरस लखारी
उन चरनन पर बलिहारी ॥ ७ ॥

सा० न० श० ५ (शब्द १२३) सफ़ा ७४

राधास्वामी का दरश मैं आज करूंगी ।
पल २ छिन २ पार रहूंगी ॥ १ ॥
जक्त जाल से बहुत बचूंगी । कर्म काल को मार धरूंगी ॥ २ ॥
सुरत चढ़ाय असमान भरूंगी । गगन मंडल की सैर करूंगी ॥
धुन धधकार अनंत सुनूंगी । शब्द अमीरस अगम पियूंगी ॥ ४ ॥
पुष्ट होय गुरु चरण गहूंगी । सुखमन संग बिलास करूंगी ॥ ५ ॥
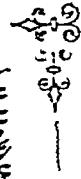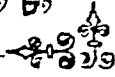
वंकनाल में सहज धसूंगी। त्रिकुटी जा में ओंग गहूंगी ॥ ६ ॥
सुन्न महासुन परा सजूंगी । भंवरगुफ़ा सतलोक रहूंगी ७
अलख अगम धुन नित्त भजूंगी।
राधास्वामी चरण स्पर्श करूंगी ॥ ८ ॥

सा० न० नं श० १ (शब्द १२४) सफ़ा ३५६

चलोरी सखी आज पिया से मिलाऊं।
तन मन धन की प्रीत छुड़ाऊं ॥ १ ॥

पुत्र कलित्र जाल छुटकाऊं ।
सुन्न मंडल धुन अजब सुनाऊं ॥ २ ॥
गगन तख़्त पर जाय बिठाऊं । तीन लोक का राज दिलाऊं
तिरबेनी तीरथ परसाऊं । मन माधो से, खूंट छुड़ाऊं ॥ ४ ॥
काल चक्र से तुरत बचाऊं । कर्म काट निज घर पहुंचाऊं ५
महासुन्न और भंवरगुफ़ा से । सतपुरुष दीदार कराऊं ६
दीन दुरबीन पुर्ष इक ऐसी ।

अलख अगम के पार समाऊं ॥ ७ ॥
राधास्वामी पद हम जाना ।
कहन सुनन का लगा ठिकाना ॥ ८ ॥

सा० न० नं० १८ (शब्द १२५) सफ़ा ५८२

आज आरती करूं सुहावन ।
भावन पावन मन ललचावन ॥ १ ॥
गावन लावन प्रीत बढ़ावन । छावन उमंग हटावन धावन ॥ २ ॥

सुरत चलावन शब्द मिलावन।
सहज समावन रंग चढ़ावन ॥ ३ ॥
अघरावण कुल नाश करावन।
सीता राम अजुध्या लावन ॥ ४ ॥
सुरत सिया मन राम कहावन।
दसवां द्वार अजुध्या गावन ॥ ५ ॥
मान सरोवर घाट अन्हावन। महासुन्न में जाय चढ़ावन ॥ ६ ॥

भंवरगुफ़ा लीला दरसावन । सत्तलोक गत बीन सुनावन
अलख अगम जा शब्द जगावन ।
राधास्वामी धाम दिखावन ॥ ८ ॥

सा० नं० श० ८ (शब्द १२६) सफ़ा ६७३

आज मैं देखूं घट में तिल को ।
लगीं यह बतियां प्यारी दिल को ॥ १ ॥
गुरू अपनाया छिन २ हमको । मर्म मैं पाया चढ़कर नभ को

सहस दल चढ़ कर मिली अलख को ।
जोत लख पाई छोड़ ख़लक़ को ॥ ३ ॥
श्याम तज पहुंची सेत नगर को ।
चली और निरखा त्रिकुटी घर को ॥ ४
बहुर चल निरखा सरवर तट को ।
खोल वह द्वारा फाड़ा पट को ॥ ५ ॥
महासुन्न पागई गुप्त समझ को ॥

भंवर चढ़ परखा पुर्ष रमज़ को ॥ ६ ॥
सतपद आगे मिला सुरत को ।
सुनी धुन बीना धार निरत को ॥ ७ ॥
अलख लख पहुंची जाय अगम को ।
मिला अब राधास्वामी धाम अधम को ॥ ८ ॥

सा० नं० श० २० (शब्द १२७) सफ़ा ७२९

मौज इक धारी सतगुरु आज ।

कहूं क्या कहते आवे लाज ॥ १ ॥
गगन में देखा अजब समाज । सुरत ने पाया अद्भुत साज २
सिंह ने मारा गउवन गाज । मिरग इक आया नभ में भाज ३
अमीरस चाखा छोड़ा नाज । सुरत गई त्रिकुटी पाया राज ।४।
प्रेम का दुलहिन पाया दाज । सुन्न में दुलहा मिला अगाज ।५
सुरत ने कीना अपना काज । शब्द संग कीना आन समाज ॥६
गुरू ने दीन्ही एक अवाज़ । प्रेम की पाई बड़ी रिवाज ॥ ७ ॥

राधास्वामी सरन गही मैं आज । काज सब होगया पूरा आज

सा० नं० श० २१ (शब्द १२८) सफ़ा ७३०

घूंघट खोल चली सुत दुलहिन । दुलहा शब्द मिला अब चढ़ सुन
करत विलास एक हुइ छिन छिन । देख रूप अब होत मगन मन
लीला अद्भुत होत न वर्णन । अजब अखाड़ा रचा सेत धुन
काल पछाड़ा कीन्हा मरदन । माया ममता भागी सिर धुन ४
चली सुरत और पहुंची महासुन ।

सेज बिछाई जा चौथे खन । ५ ।

सत्तपुर्ष मुख सुनी वीन धुन । अलख अगम को कीना परसन

वहां से चली देख कुछ अगमन ।

राधास्वामी रूप निहारत दिरगन ॥ ७ ॥

देख २ फूली अब निजतन । कौन कहे वह गति राधास्वामी बिन

सा० नं० श० २४ [शब्द १२९] सफ़ा ७३३

चढ़ोरी घट देखो मौज भली ।

अगम रस पाओ आज अली । १ ।

नाम धुन अंतर खूब खुली । खोई जमा मानो फेर मिली २

चढ़ गगन शिखर खुली बंक नली ।

त्रिकुटी में बैठी शब्द पिली । ३ ।

फिर वहां से पहुंची सुन्न गली । सुनमें जा हंसन साथ रली।४।

सब आध बियाध उपाधि टली । कर्मन की रसरी अगन जली

महाकाल जाल भी जार चली । सोहंग धुन पकड़ी मूर मिली

सतनाम लखा दुख दूर टली । अलख अगम धुन चित्त खिली
राधास्वामी चरन में आन हिली ।
महिमां उन पाई सुरत घुली । ८ ।

सा० नं० श० ५ (शब्द १३०) सफ़ा ७४०

सतगुरु मैं पूरे पाये । मन घाट लिया बदलाये ॥ १ ॥
सूरत ने शब्द जगाये । घट मोती चुन २ खाये ॥ २ ॥
हंसन के जूथ दिखाये । मिल उन संग प्रेम लगाये ॥ ३ ॥

घाटीचढ़ घाटी धाये । फिर सुन्न शिखर चढ़ आये ॥ ४ ॥
सतलोक सुरत को लाये । फिर जोनी वास न आये ॥ ५ ॥
सतरूप अजब दरसाये । कोटन रवि चन्द्र लजाये ॥ ६ ॥
हंसन छवि क्या कहूं गाये । षोड़स शशि भान दिखाये ॥॥
राधास्वामी कहत बुझाये । सुन सेवक अति हरखाये ॥ ८ ॥

सा० नं० श० ४ (शब्द १३१) सफ़ा ७६२

घोर सुन चढ़ी सुरत गगना । भेद लख हुई अजब मगना ॥ १

रूप उन पाया अब अपना । जक्त हुआ झूंठा ज्यों सुपना । २
चली अब गुरु पद सो लखना । काल पर पड़ा कठिन तपना
कर्म का छूट गया खपना । सहज सुख मिला शब्द तकना ४
मेट मन कपट छुटा ठगना । अमर पद मिला जुगन जुगना ५
टेक गुरु बांध ध्यान धरना । चरन गुरु पकड़ पड़ो सरना ६
सहसदल कंवल जाय लगना । त्रिकुटी चढ़ो चाल पकना ७
सुन्न में नहीं नैन झपना । मान लो राधास्वामी गुरु कहना ८

प्रे० वा० १ नं० श० ६ (शब्द १३२) सफ़ा ११

क्या सोवे जगमें नींद भरी । उठ जागो जल्दी भोर भई ॥ १ ॥
पंथी सब उठ के राह लई । तू मंज़िल अपनी विसर गई ॥२॥
सतगुरु का खोज करो प्यारी । संग उनके बाट चलो न्यारी
भौ सागर है गाहिराभारी । गुरु बिन को जाय सके पारी ४
भगती की रीति सुनो प्यारी । गुरु चरनन प्रीत करो सारी
तज संशय भरम करम जारी ।

तब सुरत अधर घर पगधारी ॥ ६ ॥
चढ़ गगन शिखर तन मन वारी ।
धुन बीन सूनी सत पद न्यारी ॥
फिर अलख अगम जा परसारी ॥
राधास्वामी चरन पर बलिहारी

प्रे० बा० ४ नं० श० १२३ (शब्द १३३)

मनुआं अनाड़ी को समझावो। क्यों करे हमारी (आपनी) हान

जनम २ किया भोग बिलासा । छोड़ी न अपनी बान ॥ २ ॥
दुख सुख बहु बिधि भोगत रहिया ।
गुरु की सीख न मान ॥ ३ ॥
दुरलभ नर देही फिर पाई । अब तो चेत अजान ॥ ४ ॥
शब्द शोर नित घट में होता । सुनो ज़रा दे कान ॥ ५ ॥
गुरु दयाल अब भेटे आई । कर उनकी पहिचान ॥ ६ ॥
मेहर से घर का भेद सुनावें । चित लगा सुन तान ॥ ७ ॥

त्रिकुटी जाय बसो तुम प्यारे ।

तीन लोक का राज कमान ॥ ८ ॥

हम पहुंचें जहां राधास्वामी धामा ।

धर उन चरनन ध्यान ॥ ९ ॥

प्रे० बा १ नं० श० २६ (शब्द १३४) सफ़ा ४७

सजनी चेतोरी । क्यों खोये जनम बरबाद ॥ १ ॥

इस नगरी में काल बसेरा । खोज दयाल पद आद ॥ २ ॥

बिन सतगुरु तेरा काज न सरिहै । नित उन चरन अराध ॥३॥
दया मेहर से भेद बतावें । काटें काल उपाधि ॥ ४ ॥
डोरी शब्द पकड़ घट जावो । मन और सूरत साध ॥ ५ ॥
प्रेम अंग ले चढ़ो गगनपुर । सुनले अनहद नाद ॥ ६ ॥
सुन्न शिखर चढ़ भंवरगुफ़ा तक ।
सत्तशब्द धुन साध ॥ ७ ॥
राधास्वामी धाम अजब गत । वोही सब का निज आदि ॥८॥

प्रे० बा० २ नं० श० ५ (शब्द १३५) सफ़ा १०

गुरू मोहि दीना भेद अपारी। शब्द धुन सुन हुआ आनंद भारी

सुरत की लागी घट में ताड़ी।

धुनन की होत जहां झनकारी ॥ २ ॥

चरन में निस दिन प्रेम बढ़ारी।

मेहर गुरु कीनी मनुआं हारी ॥ ३ ॥

थकित होय बैठी माया नारी।

सुरत रही पियत अमीरस सारी ॥ ४ ॥
छोड़ नभ चढ़ गई गगन अटारी ।
चन्द्र लख सेत सूर निरखारी ॥ ५ ॥
अमरपुर दर्शन पुर्ष निहारी । सुनत रही मधुर वीन धुनसारी
अलख और अगम प्यार कीनारी ।
हुई मैं राधास्वामी चरन दुलारी ॥ ७ ॥
संत मोपै मेहर करी अति भारी । दई मोहिं परशादी कर प्यारी

प्रे० या० २ नं० श० १५ [शब्द १३६] सफ़ा २६

सतगुरु चरन प्रीत भई पोढ़ा । लाय रही अब सूरत डोरा १
नित्त बिलास नवीन निरखती । मेहर दया घट माहिं परखती
मन और सूरत अधर सरकते । शब्द अमीरस पाय फड़कते ३
गुरु दयाल की दया निहारत । छिन २ जग भय भाव बिसारत
घंटा सख सुनत मगनानी । त्रिकुटी चढ़ गुरु रूप दिखानी ५
सुन में जाय किय अशनांन । हंसन रूप देख हरखान ६

गुफ़ा परे जाय सुनी बीन धुन।
अलख अगम दरशन किया पुन २ ॥ ७ ॥
राधास्वामी धाम गई पुन धाई।
मेहर हुई सुत चरन समाई ॥ ८ ॥

प्रे० वा० २ नं० श० ७५ [शब्द १३७] सफ़ा २९४

सुरतिया प्रीत करत। सत गुरु से भाव जगाय ॥ १ ॥
हित चित से गुरु दर्शन करती। बचन सुनत मन लाय २

प्रीत प्रतीत बढ़त अब छिन २ गुरु सरूप रही हिये बसाय ३
सत संगियन से हेल मेळ कर ॥
गुरु सेवा को हित से धाय ४
आरत करत प्रेम से पूरी । गुरु छवि देख अधिक हुलसाय ५
दया मेहर सतगुरु की परखत ।
छिन २ अपना भाग सराय ॥ ६ ॥
शब्द संग नित सुरत चढ़ावत । गगन मंडल में पहुंची धाय

सत्तपुरुष के चरन परस के। राधास्वामी लिये मनाय ८

प्रे० बा० २ नं० श० ७६ [शब्द १३८] सफ़ा २९५

सुरतिया मेल करत। गुरु भक्तन से धर प्यार ॥ १ ॥
मदद लेय उन सब की मिलकर। आई गुरु दरबार ॥ २ ॥
दीन अधीन पड़ी गुरु चरना। मांगे शब्द का भेद अपार ॥ ३
लख अनुराग गुरू दातारा। नाम भेद दिया सब का सार ४
मेहर करी गुरु लिया अपनाई। लिखा घट में शब्द उजार ५

सुन २ धुन स्रुत चढ़ी अधर में। घंटा सुन गई नौ के पार॥६॥
त्रिकुटी जाय ओं धुन पाई। सतगुर सुनी बीन धुन सार॥७॥
राधास्वामी चरन ध्यान २ हिये में।
अलख अगम के होगई पार॥८॥

प्रे० बा० २ नं० श० ७८ (शब्द १३९) सफ़ा २९८

सुरतिया धोय रही। अब चूनर मैल भरी॥१॥
भाव भरी सतसंग में आई। गुरु चरनन स्रुत जोड़ धरी॥२॥

वचन सुनत अनुराग बढ़ावत । सेवा को नित रहत खड़ी
गुरु की दया मैल मन धोवत । निर्मल होय भवसिंध तरी ४
शब्द संग नित सुरत लगावत । चढ़ पहुंची पद परस हरी ५
गगन जाय परसे गुरु चरना । दसम द्वार गई होय छड़ी ६॥
सतगुरु दरस मिला सतपुरु में । सुफल हुई अब देह नरी ७
अलख अगम की फिर सुध लेकर । राधास्वामी चरनन आन पड़ी.

प्रे० बा. २ नं, श, ७९ (शब्द १४०) सफ़ा २९९

सुरतिया निरत करत । गुरु सन्मुख कर सिंगार ॥ १ ॥
प्रीत पतीत का ज़ेवर पहिना । भाव भक्ति के वस्तर धार २
अधर चढ़त धुन सुन स्रुत प्यारी । मस्त हुई सुन सारंग सार

हंस हंसनी संग जुड़ मिल कर ।
नाचत गावत उमंग सम्हार ॥ ४ ॥
अजब समा अचरज यह औसर ।
आनंद बरस रहा दस द्वार ॥ ५ ॥

बिना भाग बिन राधास्वामी किरपा ।

कौन लखे यह बिमल बहार ॥ ६ ॥

मुरली धुन सुन आगे चाली । बीन बजे सतगुरु दरबार ॥ ७॥

सज धज के स्रुत अधर सिधारी ।

राधास्वामी चरन मिले निज सार ॥ ८ ॥

प्रे० बा० २ नं० श० १३३ (शब्द १४१) सफ़ा ३९९

सुरतिया उमंग भरी । मिली गुरु से खोल कपाट ॥ १ ॥

परमारथ की सार जान कर । सतसंग में आई खोजत बाट । २

सुन २ वचन पुष्ट हुई मन में ।

जग भय लाज अब चित न समात ॥ ३ ॥

तन मन धन को तुच्छ जान कर ।

गुरु सेवा में ख़रच करात ॥ ४ ॥

भेद पाय अभ्यास करत नित ।

सुरत चढ़ाय अधर रस पात ॥ ५ ॥

नभ को छोड़ गगन में पहुंची ।
गुरु दर्शन कर अति हुलसात ॥ ६ ॥
सुन्न और भंवरगुफ़ा के पारा ।
सतगुरु चरनन बल बल जात ॥ ७ ॥
राधास्वामी धाम अनूप अपारा ।
निरख मगन हुई महा सुख पात ॥ ८ ॥

प्रे० बा० २ नं० १३४ (शब्द १४२) सफ़ा ४००

सुरतिया अमन हुई । तज चित से जगत कुरंग ॥ १ ॥
जगत संग नित दुख सुख सहती ।
काल करम ने कीना तंग ॥ २ ॥
वचने की कोइ जुगत न सूझे । विकल रहत अंग अंग ॥ ३ ॥
सुन २ महिमां सत संगत की । गुरु सन्मुख आई धार उमंग
वचन सुनत मन शांती आई । भजन करत चढ़ा प्रेम का रंग ५
घट में जाय अधर चढ़ सुनती । धुन घंटा और गरज मृदंग ॥६

- - - - - - - - - - - - - - - -

सुन में होय चली सतपुर को । देख काल रहा दंग ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया अमर घर पाया ।
निरमल हुई कर सतगुरु संग ॥ ८ ॥

प्रे० बा० २ नं० श० २२ (शब्द १४३) सफ़ा ४२५

आज बाजे सुन्न में सारंग सार ॥ ॥ टेक ॥
उठत मधुर धुन अमीरस भीनी । सुनत पिरेमी कोइ धर प्यार
अजब धाम जहां सेत उजारा । खिल रही जहां वहां सदा बहार
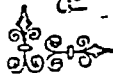
तिरलोकी का मूल अस्थाना । संतन का वही दसवां द्वार ॥३

ब्रह्म शब्द तिस नीचे जागा । मूल नाद जहां धुन ओंकार ४

सूरज मंडल लाल प्रकाशा । तिरलोकी का वही करतार ॥५॥

माया शब्द उठत तेहि नीचे । जग में बिछाया जिसने जार ॥६॥

राधास्वामी सतगुरु मिले भाग से ।

सहज उतारा भौजल पार ॥७॥

कर आरत उन हुई मगन मैं । बैठी राधास्वामी सरन सम्हार
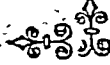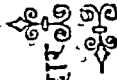
प्रे० बा० २ नं० श० ३१ [शब्द १४४] सफ़ा ४५७

आज आई सुरतिया रंग भरी ॥ ॥ टेक ॥

मन चित का लिया थाल सजाई। प्रेम की जोत जगाय धरी १

उमंग २ कर आरत फेरत। सकल पसार से होय छड़ी । २ ॥

हंस हंसनी होय इकट्ठे। गुरु सन्मुख सब आन खड़ी ॥ ३ ॥

आनंद छाय रहा आकाशा। शब्दन की अब लगी झड़ी ॥४॥

ताल मृदंग कींगरी बाजे। धूम धाम अब मची बड़ी ॥ ५ ॥

सुन २ मुरली बीन सुहावन। सत्तलोक जाय सुरत अड़ी ॥६॥

निरख रही जहां बिमल प्रकाशा।

चांद सूर की छुटी लड़ी ॥ ७ ॥

हरख २ राधास्वामी गुन गावत।

पल २ छिन २ घड़ी घड़ी ॥ ८ ॥

प्रे० बा० २ नं० श ५८ (शब्द १४५) सफ़ा ४९३

कोइ सुनो अधर चढ़ गुर के बैन ॥ टेक ॥

संतचरन में रहै लौ लीना । घट में परखे उनकी कहन । १ ।
शब्द कमाई करे प्रेम से । चित दे समझे घट की सैन ॥ २ ॥
मन्न और सुरत सिमट कर चालें ।खोलें चढ़कर तीसर नैन
सेत उजास लखे घट माहीं । धुन घंटा सुन पावे चैन ॥ ४ ॥
जोत फाड़ फिर सुन्न समावे । वंक नाल धस जावे पैन ॥ ५ ॥
त्रिकुटी गढ़ अब चढ़ कर पहुंची । काल करम का छूटा दैन ॥
हरख सुनत अब धुन ऊँकारा । भोर हुआ और मिट गई रैन

राधास्वामी दयापार पद पाया। सुरत लगी निज घर सुख लेन

प्रे० बा० २ नं० श० ६६ (शब्द १४६) सफ़ा ५०६

आज भींजे सुरत गुरु प्रेम रंग ॥ टेक ॥

उमंग भरी आई सतगुरु चरना।

बचन सुनत हुई आज निसंक ॥ १ ॥

जग का मोह त्याग दिया मन से।

दूत थके कर घट में जंग ॥ २ ॥

भोगन से चित हुआ उदासा। मन इंद्री सूखे हये नंग ॥ ३ ॥
गुरु दर्शन का भाव बढ़त नित।
और रही नहिं कोई उचंग ॥ ४ ॥
मन हुआ लीन शब्द रस पावत।
सुरत उड़न लगी जैसे पतंग ॥ ५ ॥
सहस कंवल होय त्रिकुटी धाई।
जहां गरजे गगन और बाजे मृदंग ॥ ६ ॥

सुरत रंगीली चली ऊंचे को। छूट गया अब सबही कुसंग ।७

राधास्वामी प्रीतम मिले अधर में ।

लिपट रही सुत उमंग उमंग ॥ ८ ॥

प्रे० बा० २ नं० श० ५ (शब्द १४७) सफ़ा ५३०

त्याग चल सजनी माया देस ॥ ॥ टेक ॥

तीन लोक में काल बियापा। सब जिव भोगें करम कलेश ॥१।

निकसन की कोई राह न पावें। छोड़ न सकते माया लेस ॥२।

याते खोज करो सतगुरु का । बिरथा काहे बितावो बैस ॥ ३ ॥
सतसंग कर उन जुगत कमावो ।
सुरत शब्द का ले उपदेश ॥ ४ ॥
मेहर दया सतगुरु की संग ले । सुरत शब्द में करो प्रवेश ॥५॥
धर परतीत उन सरन सम्हालो ।
काल करम की जाय न पेश ॥ ६ ॥
सुन्न में जाय मानसर न्हावो ।

सुरत धरे तब हंसा भेस ॥ ७ ॥
सतपुर जाय काज हुआ पूरन ।
राधास्वामी को अब करूं आदेश ॥ ८ ॥

प्रे० वा० २ नं० श० ८ (शब्द १४८) सफ़ा ५३५

लिपट गुरु चरन प्रेम संग आज । ॥ टेका ॥
उमंग उमंग सतसंग कर उनका ।
भक्ति भाव का लेकर साज ॥ १ ॥

विरह अनुराग छाय रहा घट में ।
छोड़ दई कुल जग की लाज ॥ २ ॥
दरशन कर गुरु नैंन कंवल तक ।
धुन सुन जाय सुरत नभ भाज ॥ ३ ॥
सेवा करत वढ़त हिये प्रीती ; त्रिकुटी चढ़ भोगे सुर्त, राज ॥४॥
करत विलास विमल हंसन संग ।
मन माया का छोड़ा पाज ॥५॥

भंवरगुफ़ा पहुंची गुरु लारा। सोहंग शब्द रहा जहां गाज ॥६

सत्त नाम सत पुरुष रूप लख। प्रेम भक्ति का पाया दाज॥७

राधास्वामी धाम गई सुर्त सज के।

आज हुआ मेरा पूरन काज ॥ ८ ॥

प्रे० वा० २ नं० श० १२ (शब्द १४९) सफ़ा ६३५

वचन सतगुरु सुने भारी। अहा हाहा ओहो होहो ॥१॥

भेद घट का मिला सारी। अहा हाहा ओहो होहो ॥२॥

लगी धुन में सुरत प्यारी । अहा हाहा ओहो होहो ॥३॥
खिली पचरंग फुलवारी । अहा हाहा ओहो होहो ॥४॥
जोत लख गगन गरजारी । अहा हाहा ओहो होहो ॥५॥
चंद्र और सूर परखारी । अहा हाहा ओहो होहो ॥६॥
अमर पुरु बीन झनकारी । अहा हाहा ओहो होहो ॥७॥
चरन राधास्वामी परवारी । अहा हाहा ओहो होहो ॥८॥

प्रे० वा० ३ नं० श० २ (शब्द १५०) सफ़ा २८१

राधास्वामी संग लगाई । मोहि वचन सुनाई । हिये प्रीत बढ़ाईरे
राधास्वामी २ राधास्वामी प्यारे राधास्वामीरे ॥१॥

राधास्वामी सेवाधारी । उननैन निहारी । हिये भई उजियारीरे
राधास्वामी २ राधास्वामी प्यारे राधास्वामीरे ॥२॥

राधास्वामी भेद बताया । घट शब्द सुनाया ।
सोता मनुआं जगायारे
राधास्वामी २ प्यारे राधास्वामीरे ॥३॥

मन उमगत चाला । घट देख उजाला । लखा रूप दयालारे ॥
राधास्वामी ३ प्यारे राधास्वामीरे ॥४॥
त्रिकुटी घन गाजा । सुन सारंग बाजा । मुरली धुन साजारे ॥
राधास्वामी ३ प्यारे राधास्वामीरे ॥५॥
सतपुर माहिं धावत । धुन बीन सुनावत ।
करी सतगुरु आरतरे ।
राधास्वामी ३ प्यारे राधास्वामीरे ॥६॥

लख अलख सरूपा । मिल अगम कुल भूपा ।
गई धुर धाम अनूपा रे
राधास्वामी २ प्यारे राधास्वामीरे ॥७॥
राधास्वामी रूप निहारा । हुआ आनंद भारा । सब काजसंवारे
राधास्वामी ३ प्यारे राधास्वामीरे ॥ ८ ॥
प्रे० वा० ३ नं० श० ७ (शब्द १५१) सफ़ा ३११
आज मैं पाई सरन गुरु पूरे । ॥ टेक ॥

दृढ़ परतीत हिये विच लावन ॥ ३ ॥
सुरत शब्द में नित्त लगावन ।
नभ की ओर सुरत मन धावन ।
धुन घंटा और संख बजावन ।
अद्भुत रूप जोत दरसावन ॥ ५ ॥
त्रिकुटी जाय सुरत हुई पावन ।
हंसन संग मानसर न्हावन ॥ ६ ॥

भंवरगुफ़ा मुरली धुन गावन । सतपुर सुनी धुन बीन सुहावन
राधास्वामी चरन धियावन । मेहर दया उन छिन २ पावन

प्रे० बा० ३ नं० श० २४ (शब्द १५३) सफ़ा ४८२

आज गुरु खेलन आए होरी । जग जीवन का भाग जगोरी ॥ १
प्रेम घटा अब बरसन लागी । धारा रंग बहोरी ॥ २ ॥
सुरत अबीर घुमंड रहा चहुं दिस । मनुआं उमंग रहोरी ॥ ३ ॥
घंटा संख मृदंग बांसुरी । सारंग बीन बजोरी ॥ ४ ॥

हरख २ सब गिरते चरनन । प्रेम भक्ति गुरु दान दियोरी ॥५

काल करम का दाव चुकाया । खोल दई माया की चोरी ॥६

करम भरम तज जीव सुखारी । पकड़ शब्द निज घर को दौड़ी

अस लीला कहो कौन दिखावे ।

राधास्वामी दाता दया करोरी ॥ ८ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० २ (शब्द १५४) सफ़ा ५२३

ऐसी गहिरी पिरेमन नार। गुरू को लीन रिझाई ॥ १ ॥
सेवा करत प्रेम से निस दिन। तन मन दीन चढ़ाई ॥ २ ॥
गुरु दर्शन बिन कल न पड़त है। छिन २ मन अकुलाई ॥ ३ ॥
जब गुरु दर्शन करते मगन होय। फूली तन न समाई ॥ ४ ॥
आरत कर २ प्रेम चढ़ावत। गुरु छवि पर बलिजाई ॥ ५ ॥
सुरत लगाय शब्द संग धावत। नभ तज गगन चढ़ाई ॥ ६ ॥
सुन्न सिखर चढ़ भंवरगुफ़ा लख। अमर लोक धस जाई ॥ ७॥

अलख अगम से मेला करके । राधास्वामी चरन समाई ॥ ८॥

प्रे० बा० ३ नं० १ श० २० (शब्द १५५) सफ़ा ५६२

राधास्वामी चरनन आवोरे मना ।
भाग अपना लेव जगायरे मना ॥ १ ॥
तन मन धन संग तुम लाओरे मना ।
गुरु चरनन भेट चढ़ाओरे मना ॥ २ ॥
अब काम क्रोध तज आओरे मना ।

तब राधास्वामी किरपा पाओरे मना ॥ ३ ॥
सतसंग कर भाव बढ़ाओरे मना ।
गुरु चरनन सुरत लगाओरे मना ॥ ४ ॥
शब्दारस घट में पाओरे मना । गुरु महिमां छिन २ गाओरे मना
वहां अनहद तूर बजाओरे मना ।
दसवा दर सहज खुलाओरे मना ॥ ६ ॥
सुरत खैंच अधर को चढ़ाओरे मना ।
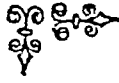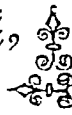
धुन मुरली बीन सुनाओरे मना ॥ ७ ॥
वहां से भी क़दम बढ़ाओरे मना ।
राधास्वामी चरन समाओरे मना ॥ ८ ॥

प्रे० बा० ३ नं० श० ६ (शब्द १५६) सफ़ा ६२२

प्यारे ग़फ़लत छोड़ो सर वसर । गुरु वचन सुनो तुम होशियार
मन को तरंगें रोक कर । सतसंग में तुम बैठो जाय ॥ १ ॥
गुरु का चरन पकड़ जकड़ । गुरु का सरूप ध्यान धर ।

इस मन की खोवो सब अकड़। नैनन में तुम बसो आय ॥ २ ॥
यह दुनियां ख्वाब ख़याल है। जो आया यहां सो चाल है।
क्या पूछो यहां क्या हाल है। यह काल कराला सब को खाय
क्या भूला तू धन माल देख। माया का यह सब जाल पेख ३
काल करक की मिटे रेख। जो सतगुरु की सरन आय ॥ ४ ॥
सतगुरु से कर आन प्यार। उन से ले भेद सार ॥
सुरत शब्द मारग अपार। सुरत मन धुन से लगाय ॥ ५ ॥

देख अंतर जोती जमाल । लख गगना में सूर लाल ॥
सुन्न के परे महाकाल । सतगुरु संग चलो धाय ॥ ६ ॥
मुरली धुन सुन रसाल । ऊंचे पर धरो ख्याल ॥
सत्तपुरुष निरखो जलाल । फिर अलख अगम परस जाय॥७॥
धाम अनामी धुर अधर । निरखा जाय अति प्रेम कर ।
राधास्वामी चरनन सीस धर । अस्तुत उनकी रही गाय ॥८॥

प्रे० बा० ४ नं० श० ६१ (शब्द १५७)
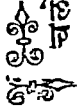
चलोरी सखी आज गगन पुरी ।
जहां गुरु प्यारे फाग मचाय रहेरी ॥ टेक ॥
गुरु सतसंगी सब मिल खेलैं । प्रेम का रंग बहाय रहेरी ॥१॥
आगे चल देखूं सुन नगरी । जहां हंस हंसनी गाय रहेरी ॥२॥
शब्द शोर जहां मच रहा भारी । अमृत धार चुवाय रहेरी ॥३॥
महासुन्न चढ़ भंवरगुफ़ा लख । जहां वंसी मधुर वजाय रहेरी ॥४॥
सतपुर जाय दरसपुर्ष कीना ।
जहां अचरज वीन सुनाय रहेरी ॥ ५ ॥

राधास्वामी चरन हुई लौ लीना ।
जहां अलख अगम दर छाय रहेरी ॥ ६ ॥

प्रेम का स्रोत पोत जहां भारी । मेहर दया उमंगाय रहेरी ७
राधास्वामी मात पिता पति मेरे ।
मोहि प्यार से गोद बिठाय रहेरी ॥ ८ ॥

सा० न० नं० श० १७ (शब्द १५८) सफ़ा ३४८

मन मारो तन को जारो । इन्द्री रस भोग बिसारो ॥ १ ॥
तुम निंद्रा आलस टारो । गुरु के संग शब्द पुकारो ॥ २ ॥
सतंसग तुम नित ही धारो । गुरु दर्शन नित्त निहारो ॥ ३ ॥
मन से क्यों दम २ हारो । जग आसा दूर निकारो ॥ ४ ॥
यह भर्म सभी अब टारो । फिर परखो तुम घर न्यारो ॥ ५ ॥
खोलो चढ़ गगन किवाड़ो । धस बैठो दसवें द्वारो ॥ ६ ॥
फिर महासुन्न होय पारो । तहां देखो भंवर उजारो ॥ ५ ॥

सत्त नाम मिला अति प्यारो । जा अलख अगम को धारो॥ ८
राधास्वामी धाम अपारो। दिया सतगुरु परम उदारो ॥९॥ ॥

सा० नं० श० २ [शब्द १५९) सफा ३५७

जागोरी सुरत अब देर न करो ।
चालोरी सुरत अब गगन चढ़ो ॥ १ ॥
भागोरी सुरत अब पिया से मिलो
लागोरी सुरत अब शब्द रलो ॥२॥

ताकोरी सुरत अब निरत करो ।
झांकोरी सुरत अब मूरत लखो ३
न्हावोरी सुरत और नीर भरो ।
धावोरी सुरत और ध्यान धरो ॥ ४ ॥
गावोरी सुरत और गवन करो ।
भोगोरी सुरज सुख सहज वरो ॥ ५
झंझरी निरख फिर फिर नाम भजो ।

वंक छोड़ धुन गगन गहो ॥ ६ ॥
सुन्न तजो महासुन्न रहो । भंवर गुफ़ा पर जाय अड़ो ॥ ७ ॥
सत्तलोक सत नाम रसो । अलख अगम के पार वसो ॥८ ॥
राधास्वामी २ रटन करो । बहुत कहा अब ख़तम करो ॥ ९॥

सा० नं श० ३ (शब्द १६०) सफा ३५८

भक्ति अब करो मेरे भाई । प्रीत अब धरो मेरे भाई ॥ १ ॥
अजब यह औसर पाई । मिले अब राधास्वामी आई ॥ २ ॥
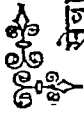
सेवा दर्शन बाड़ धराई । पौद अब शब्द खिलाई ॥ ३ ॥
सुरत शमशेर चलाई । काल सिर काट गिराई ॥ ४ ॥
धमक अब सुन्न समाई । चमक जहां चन्द्र दिखाई ॥ ५ ॥
श्याम तज सेत मिलाई । हेत कर नेत घर आई ॥ ६ ॥
महासुन तार मिलाई । भंवर का द्वार तुड़ाई ॥ ७ ॥
शब्द पद जाय समाई । अलख और अगम सराई ॥ ८ ॥
राधास्वामी अगम सुनाई । सरन अब पूरी पाई ॥९॥
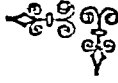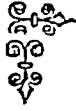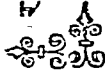
प्रे० बा० १ नं० श०२ (शब्द १६१) सफा ६

चेतरी पिया प्यारी सहेली । गुरु चरनन चित लाओरी ॥१॥
उमंग सहित दर्शन कर उनका । फिर न मिले ऐसा दाओरी
प्रीत प्रतीत बढ़ाओ दिन दिन । छिन २ महिमां गाओरी ३
सोच विचार कहा करे मन में । लाओ पूरन भाओरी ॥४॥
गुरु का रूप बसे नैनन में । राधास्वामी ध्याओरी ॥५॥
निर्मल निश्चल चित होय तेरा ।

मन और सुरत चढ़ाओरी ॥६॥
नभ को फोड़ धसो त्रिकुटी में । मान सरोवर न्हाओरी ॥७॥
भंवर गुफा की खिड़की खोलो । सत्त लोक धस जाओरी ८
अलख अगम का दर्शन करके । राधास्वामी चरन समाओरी

प्रे० वा० १ नं० श० १५ (शब्द १६२) सफ़ा २५

अरे मन सोच समझ गुरु वैन । जगत में नहिं पावे सुख चैन
फिरे मद माता इन्द्रियन साथ । चाह में भोगन के दिन रात

दुक्ख सुख भोगत बारंबार। समझ अवमान कहत गुरु सार
करो अब सत संग धर कर प्यार।
मान मद करम भरम को जार ॥ ४ ॥
नाम का सुमिरन करो बनाय। रूप गुरु हरदम हिये बसाय
मेहर गुरु करि हैं तेरा काज। सुरत मन पावें अद्भुत साज
गगन चढ़ सुने शब्द की गाज। त्रिकुटी जावे पावे राज ॥७॥
वहां से पहुंचे सतगुरु देस। धरे जहां सूरत हंसा भेस ॥८॥

प्रेम अंग आरत करे बनाय।
चरन में राधास्वामी जाय समाय ॥ ८ ॥

प्रे० बा० २ नं० श० ८ (शब्द १६३) सफ़ा १४

सरन गुरु हुआ मोहिं आधार।
चरन में आई धर कर प्यार ॥ १ ॥
करूं नित दर्शन दृष्ट सम्हार।
पिऊं में चरन अमी रस सार ॥ २ ॥

करूं गुरु आरत नित्त नवीन ।
रहूं गुरु चरनन दीन अधीन ॥ ३ ॥
हंस जुड़ मिल आरत गाते
निरख गुरु छवि हिये मगनाते
बजत घट बाजे घंटा संख ।
सुरत धस चढ़ती नाली बंक ॥ ५ ॥
गगन में धुन मिरदंग सुनाय ।
दसम दर चन्द्र रूप दरसाय ॥ ६ ॥

भंवर में सेत सूर परकाश।
करूं धुन मुरली संग विलास ॥ ७ ॥
अमरपुर होय अलख लखिया।
परे चढ़ दरस अगम तकिया ॥ ८ ॥
वहां से राधास्वामी धाम गई।
उमंग कर राधास्वामी चरन पई ॥ ९॥

प्रे० था० २ नं० श० १० [शब्द १६४) सफ़ा १८

प्रेम परकाशा सूरत जागी ।
शब्द गुरू के चरनन लागी ॥ १ ॥
सील छिमा चित आय समाई ।
काम क्रोध अब गये नसाई ॥ २ ॥
सतसंग में मन चित्त खिलाना ।
दरस अमीरस नित्त पिलाना ॥ ३ ॥
मन हुआ लीन गुरू चरनन में ।

सुरत लगी अब जाय धुनन में ॥ ४ ॥
घट भीतर अब देख उजारी ।
तन मन की गई सुध्य बिसारी ॥ ४ ॥
जोत निरख फिर देखा सूर ।
सारंग सुनत हुआ मन चूर ॥ ६ ॥
मुरली धुन चढ़ गुफ़ा वजाई ।
अमरलोक सतशब्द सुनाई ॥ ७ ॥

अलख अगम चढ़ पहुंची छिन में
रली जाय राधास्वामी चरनन में ॥ ८ ॥
वहां आरती प्रेम सिंगारी ।
राधास्वामी दया करी कर प्यारी ॥ ९ ॥

प्रे० बा० २ नं० श० १७ (शब्द १६५) सफ़ा २९

अचरज लीला देख मगन मन ।
उमंग उमंग करती गुरु दर्शन ॥ १ ॥

हरख २ गावत गुरु वानी ।
परख २ गुरु मेहर निशानी ॥ २ ॥
नित २ सुनती अनहद तूर ।
खट पट मन की करती दूर ॥ ३ ॥
झट पट सुरत अधर को जाती ।
लटपट धुन सुन माहिं समाती ॥ ४ ॥
चमन २ फुलवार दिखानी ।

बाग़ २ हिये माहिं खिलानी ॥ ५ ॥

सुरत शब्द संग करती मेला ।
त्रिकुटी धाम करत नित केला ॥ ६ ॥

गुरु के रंग रंगी सुत प्यारी ।
आगे चढ़ सतशब्द सम्हारी ॥ ७ ॥

अलख अगम के चढ़ गई पार ।
राधास्वामी चरन किया दीदार ॥ ८ ॥

राधास्वामी मेहर पाई मैं आज ।
सहज हुआ मेरा पूरन काज ॥ ९ ॥

प्रे० वा० २ नं० श० १९ (शब्द १६६) सफ़ा २०८

सुरतिया बिगस रही लख कंवल कली ॥ १ ॥
उलटत दृष्टि जोड़ तिल अंदर । नभ की ओर चली ॥ २ ॥
सहसकंवल जाय वासा कीना । जहां वहां जोत बली ॥ ३ ॥
घंटा संख तजी धुन दोई । निरखी आगे गगन गली ॥ ४ ॥

माया थाक रही मग माहीं । हार रहा अब काल बली ॥ ५ ॥
अक्षर निः अक्षर के पारा । सत्तशब्द में जाय रली ॥ ६ ॥
संत मते की सार न जानी । वेद कतेब रहे हार तली ॥ ७ ॥
अलख अगम का रूप निहारत ।
राधास्वामी चरनन जाय मिली ॥ ८ ॥
मेहर दया जस मोपर कीनी । गुन उनका कस गाऊं अली ॥९

प्रे० बा० २ नं० श० ८१ (शब्द १६७) सफ़ा ३०२

सुरतिया अभय हुई। घट में गुरु दरशन पाय ॥ १ ॥
प्रीत प्रतीत धार गुरु चरनन।
सुरत शब्द की जुगत कमाय ॥ २ ॥
चढ़त अधर पहुंची नभपुर में। धुन घंटा और संख सुनाय ३
गढ़ त्रिकुटी अब चढ़ कर लीना।
अनहद धुन मिरदंग बजाय ॥ ४ ॥
गुरु सरूप के दर्शन कीने। माया काल रहे मुरझाय ॥ ५ ॥

कंवलन की फुलवार खिलानी ।
सूरज चांद अनेक दिखाय ॥ ७ ॥
ऊपर चढ़ पहुंची दस द्वारे । हंसन संग मिली अब माय ॥ ७॥
तीन लोक के होगई पारा । निर्भय हुई सुन धुन रस पाय ॥८
दया मेहर से यह पद पाया । राधास्वामी लिना मोहि अपनाय

प्रे० बा० २ नं० श० १२३ (शब्द १६८) सफ़ा ३८२

सुरतिया वचन सम्हार । गुरू की मौज निहार रही ॥ १ ॥

उमंग २ सतसंग को धावत । प्रीत हिये में धार रही ॥ २ ॥
कर परतीत गुरू चरनन में । सुरत शब्द मत सार लई ॥३॥
नित अभ्यास करत धर प्यारा । मन के विकार निकार दई ॥
ध्यान धरत गुरु रूप निहारत । नई २ उमंग जगाय रही ॥५॥
शब्द माहिं नित सुरत लगावत । सुनत मधुर धुन अधर गई
जोत उजार लखा नभ माहीं । तिस परे धुन ओंकार गही ७
सुन में चन्द्ररूप जाय लखिया
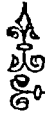
गुफ़ा परे सतलोक रही ।
वहां से राधास्वामी धाम सिधारी ।
दया मेहर उन पाय रही ॥ ९ ॥

॥ इति ॥

॥ ग़लत नामा ॥

सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	६	धार	धारा	१७	७	लेस	देस
६	१	सोहग	सोहंग	१८	१	देस	लेस
८	७	गिरहि	गिरही	१९	२	नान	नाद
१३	६	उजियार	उजियारी	२२	७	सुरत	सूरत
१६	६	अनूप	अरूप	२५	१	जानो	कर जानो
१७	२	मनमें	नभ में	२७	६	घटमें	घटका

सफ़ा	सतर	अशुद्ध	शुद्ध	सफ़ा	सतर	अशुद्ध	शुद्ध
३०	४	हों	हो	८८	६	शब्न	शब्द
३१	१	भो	भौ	८८	७	वाजे	वाजैं
३१	७	धुन सुन	सुन धुन	९२	१	प्यार	प्यार
४०	१	दूरि	दूर	९२	४	नाचे	नाचै
४९	६	सुरत	सुरत अधर	९४	१	सरत	सुरत
५२	२	ओ सुरत	और सूरत	९४	२	धुनी	सुनीं
७८	१	मेरं	मेरे	९७	६	धरना	धरना

सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०४	१	हत	हेत	१७६	२	चढ़े	चढ़ै
११४	२	वहा	वहां	१७७	२	डारा	डाला
१२७	७	सनत	सुनत	२०४	२	परा	पार
१६६	५	दजिे	दीजै	२०६	७	छावन	छावन
१६७	३	पापत	पावत	२१५	१	खिली	खली
१६७	५	चढ़वत	चढ़ावत	२२५	६	सख	संख
१७०	७	भेंटे	भेंटे	२२६	३	धाई	धाई

सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	सफ़ा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२२९	३	ध्यानर	ध्यानधर	२६३	७	उचरज	अचरज
२२९	७	जोड	जोड़	२६४	४	राधास्वामी	राधास्वामी
२४०	५	वंकनाल	बंकनाल	२६६	७	शव्द	शब्द
२५२	६	सुन धुन	धुन सुन	२६७	४	धावोरी	धाचोरी
२५२	७	धुन सुन	सुन धुन	२६७	६	सुरज	सुरत
२५९	६	दसवा	दसवां	२७२	१	कहत	कहन
२६१	४	पेख	पेख	२८४	५	लिना	लीना

बिला इजाज़त बाबू प्रेम परकाश उर्फ़ लाला अजुध्या परशाद
साहब ख़लफ़उल्ररशीद हज़ूर महाराज राय सालिगराम
साहब बहादुर के कोई इस पोथी को नहीं
छाप सक्ता
आगरा
ईजाद किशन प्रेस में छापी गई
पहली बार १००० जिल्द) १८९९ ई० (मूल्य फ़ी पुस्तक ।-)